INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

2021-22

राजस्थान ग्राम विकास अधिकारी

(VDO) (ग्राम सेवक)

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

RAJASTHAN SUBORDINATE AND MINISTERIAL SERVICE SELECTION BOARD (RSMSSB)

भाग-2 भूगोल + अर्थव्यवस्था + इतिहास + संस्कृति (राजस्थान + भारत)

1. राजस्थान का प्राकृतिक भूगोल -

1. सामान्य परिचय
2. राजस्थान की जलवायु
3. नदियाँ एवं झीलें
4. वनस्पतियाँ
5. मृदा क्षेत्र विस्तृत भौतिक खण्ड
6. जनसंख्या
7. बेरोजगारी
8. दरिद्रता, सूखा, अकाल और मरुस्थलीकरण की समस्याए

2. राजस्थान के प्राकृतिक संसाधन -

9. खान एवं खनिज
10. वन, भूमि एवं जल
11. पशु संसाधन
12. वन्य जीव एवं संरक्षण

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

3. भारत और राजस्थान के विशेष सन्दर्भ के साथ कृषि और आर्थिक विकास-

13. राजस्थान की खाद्य एवं वाणिज्य फसल,
14. कृषि आधारित उद्योग ,
15. मुख्य सिचाई एवं नदी घाटी परियोजनाएं
16. मरुस्थल एवं बंजर भूमि के विकास के लिए परियोजनाएं
17. वृहत् उद्योग
18. जनजातियाँ और उनकी अर्थव्यवस्था

I. इतिहास और संस्कृति – निम्नलिखित के विशिष्ट सन्दर्भ के साथ भारत और राजस्थान के मुख्य स्मारक तथा साहित्यिक कृति इतिहास और संस्कृति –

(अ) इतिहास और संस्कृति (भारत के सन्दर्भ में)

1. प्राचीन भारत का इतिहास
2. मध्यकालीन भारत का इतिहास
3. आधुनिक भारत का इतिहास
4. संस्कृति के कुछ महत्वपूर्ण विषय

(ब) इतिहास और संस्कृति (राजस्थान के सन्दर्भ में)

इतिहास –

1. राजस्थान इतिहास के स्त्रोत
2. प्राचीन सभ्यताएँ
3. गुर्जर प्रतिहार वंश
4. मेवाड़ का इतिहास
5. मारवाड़ का इतिहास
6. राजस्थान के प्रमुख वंश
7. मुग़ल साम्राटों और उनकी राजपूती नीति
8. मध्यकालीन राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था
9. राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियाँ
10. राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह
11. राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आन्दोलन
12. राजस्थान में प्रजामंडल
13. राजस्थान का एकीकरण

संस्कृति -

14. जनजातियाँ और उनकी अर्थव्यवस्था
15. बोलियाँ और साहित्य
16. संगीत, नृत्य और रंगशाला
17. धार्मिक आस्था, सम्प्रदाय, सन्त, कवि, योद्धा सन्त,
18. "लोक देवता" और "लोक देवियाँ
19. हस्त शिल्प
20. मेले और त्यौहार, रूढ़िया , वस्त्र एवं आभूषण, उनके लोक एवं जनजातीय पहलुओं के विशिष्ठ सन्दर्भ में

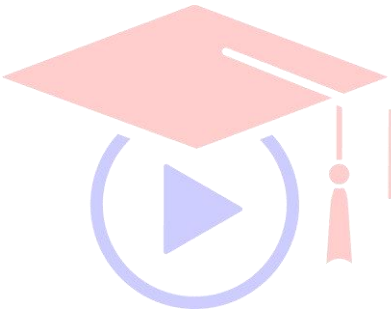

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – I

सामान्य परिचय

प्रिय छात्रों, राजस्थान के भूगोल का अध्ययन करने के लिए हम इसे निम्न दो भागों में विभाजित करेंगे-

1. सामान्य परिचय
2. भौतिक स्वरूप

1. सामान्य परिचय-

प्रिय छात्रों,सामान्य परिचयके अंतर्गत हम राजस्थान के निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे-

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख

(ख) राजस्थान की स्थिति

(ग) राजस्थान का विस्तार

(घ) राजस्थान का आकार

(ङ) राजस्थान की आकृति

2. भौतिक स्वरूप- इसी प्रकार भौतिक स्वरूप के अंतर्गत हम निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे–

(क)पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

(ख)अरावली पर्वतीय प्रदेश

(ग) पूर्वी मैदानी प्रदेश

(घ) दक्षिण पूर्वी पठारी प्रदेश

1. <u>राजस्थान का परिचय</u>

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख- राजस्थान- राजाओं का स्थान

प्रिय छात्रों, राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख राजस्थानी साहित्य विक्रम संवत 682 ई. में उत्कीर्ण बसंतगढ़ (सिरोही जिला) के शिलालेख में मिलता है।

- मारवाड़ इतिहास के प्रसिद्ध लेखक "मुहणोत नैणसी"ने भी अपनी पुस्तक "नैणसी री ख्यात" में भी राजस्थान शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन इस पुस्तक में यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ नहीं लगता।
- महर्षि वाल्मीकि ने राजस्थान की भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुकान्तार" शब्द का उल्लेख किया है।
- जॉर्ज थॉमस पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सन 1800 ई. में इस भौगोलिक क्षेत्र को "राजपूताना" शब्द कहकर पुकारा। इस तथ्य का वर्णन विलियम फ्रैंकलिन ने अपनी पुस्तक "मिलिट्री मेमोरीज ऑफ़ मिस्टर थॉमस" में किया है।
- **जॉर्ज थॉमस:-** जॉर्ज थॉमस एक आयरलैंड के सैनिक थे जो कि 18वीं. सदी में भारत आए और 1798 से 1800 तक भारत में एक छोटे से क्षेत्र (हिसार-हरियाणा) के राजा रहे। इन्होंने राजस्थान को "राजपूताना" शब्द इसलिए कहा क्योंकि मध्यकाल एवं पूर्व आधुनिक काल में राजस्थान में अधिकांश राजपूत राजवंशों का शासन था। ब्रिटिश काल में इस क्षेत्र को "राजपूताना" कहा जाता था
- विलियम फ्रैंकलिन:-विलियम फ्रैंकलिन मूल रूप से लंदन के निवासी थे। यह जॉर्ज थॉमस के घनिष्ट मित्र थे। उन्होंने 1805 जॉर्ज थॉमस के ऊपर "A Military Memories of George Thomas" नामक पुस्तक लिखी थी।
- अकबर के नवरत्नों में से एक मध्यकालीन इतिहासकार "अबुल फजल" ने इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुभूमि" शब्द का प्रयोग किया है।
- 1829 ईस्वी में "कर्नल जेम्स टॉड" ने अपनी पुस्तक "एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" में सर्वप्रथम राजस्थान को "रजवाड़ा" या राजस्थान का नाम दिया था।
- **कर्नल जेम्स टॉड:-** कर्नल जेम्स टॉड 1818 से 1821 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत में एक पॉलिटिकल (राजनीतिक) एजेंट थे तथा कुछ समय तक मारवाड़ रियासत के ब्रिटिश एजेंट भी रहे। कर्नल जेम्स टॉड UK के मूल निवासी थे, उन्होंने अपने घोड़े पर घूम - घूम कर राजस्थान के इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए इन्हें घोड़े वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है।
- कर्नल जेम्स टॉड को "राजस्थान के इतिहास का पितामह" कहा जाता है।

- कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" को "सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" के नाम से भी जानते हैं।
- इस पुस्तक का पहली बार हिंदी अनुवाद राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार "गौरीशंकर - हरीशचंद्र ओझा" ने किया था। इसे हिंदी में "प्राचीन राजस्थान का विश्लेषण" कहते हैं।
- महाराज भीम सिंह ने कर्नल की सेवाओं से प्रभावित होकर गांव का नाम "टाडगढ़" रख दिया था, जो कालांतर में टाडगढ़ कहलाने लगा जोकि आज अजमेर जिले की तहसील का मुख्यालय है।

(ख) राजस्थान की स्थिति:- प्रिय छात्रों, राजस्थान की स्थिति को हम सर्वप्रथम पृथ्वी पर तत्पश्चात एशिया में और फिर भारत में देखेंगे।

(।) राजस्थानकीस्थिति"पृथ्वी"पर:-पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति को समझने से पहले निम्नलिखित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझना होगा-

(क) अंगारालैंड/युरेशियल प्लेट

(ख) गोंडवाना लैंड प्लेट

(ग) टेथिस सागर

(घ) पेंजिया

(ङ) पेंथाल्जा

नोट:- प्रिय छात्रों, कृपया ध्यान दें कि - आज से करोड़ों वर्ष पहले पृथ्वी सिर्फ दो हिस्सों में बंटी हुई थी।

।.स्थल

2.जल

जैसा कि आज भी है, लेकिन वर्तमान में यदि हम स्थल मंडल को देखें तो हमें यह कई भागों में विभाजित हुआ दिखता है, जैसे सात महाद्वीप अलग-अलग है। उनके भी कई देश एक-दूसरे से काफी अलग अलग है इत्यादि। लेकिन बहुत पहले संपूर्ण स्थलमंडल सिर्फ एक ही था; इसी स्थलीय क्षेत्र को "पेन्जिया" के नाम से जानते थे तथा बाकी बचे हुए

हिस्से को (जल वाले क्षेत्र को)"पेंथाल्जा" के नाम से जानते थे। अब इसे नीचे दिए गए मानचित्र से समझने की कोशिश कीजिए-

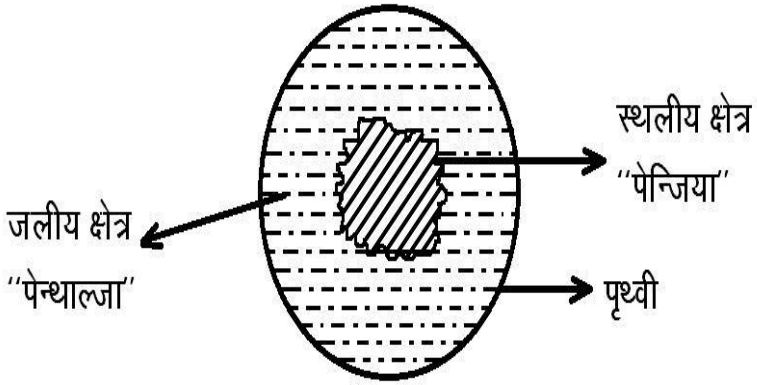

प्रिय छात्रों, पृथ्वी परिक्रमण एवं परिभ्रमण गति करती है अर्थात् अपने स्थान पर भी (1 दिन में) घूमती है, और सूर्य का चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी की इस गति की वजह से स्थल मंडल की प्लेटों में हलचल होने की वजह से पेन्जिया (स्थलीय क्षेत्र)दो भागों में विभाजित हो गया जिसके उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ / इस स्थलीय क्षेत्र को "अंगारा लैंड /यूरेशियन प्लेट" के नाम से जानते है।

- *इसके दूसरे भाग (दक्षिणी) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को "गोंडवाना लैंड"'प्लेट' के नाम से जानते है।*
- *दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "टेथिस सागर" के नाम से जानते थे।- इसको नीचे दिए गए मानचित्र की सहायता से समझते हैं-*

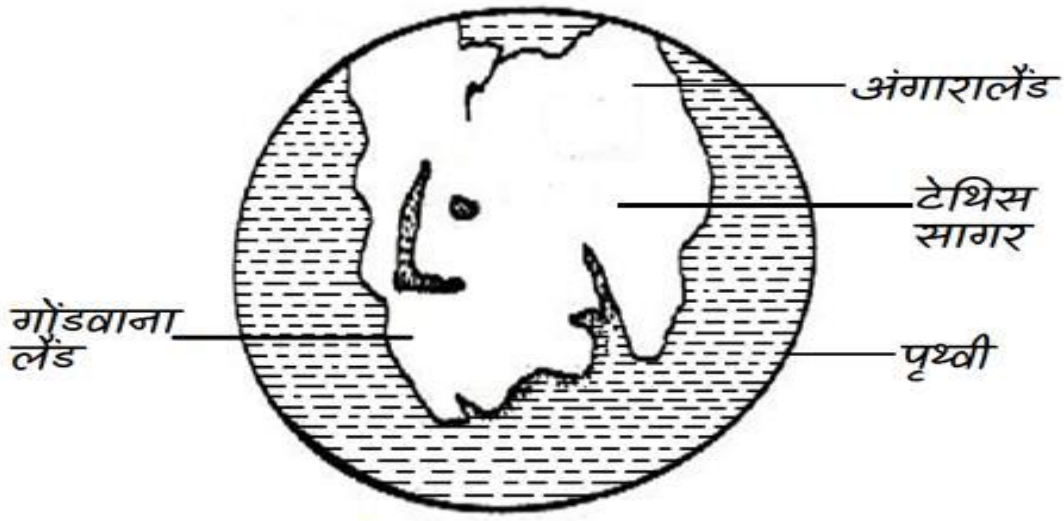

नोटः- राजस्थान का पश्चिमी रेगिस्तान तथा रेगिस्तान में स्थित खारे पानी की झीलें "टेथिस सागर" के अवशेष हैं तथा राजस्थान का मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (अरावली पर्वतमाला) एवं दक्षिण पूर्वी पठार भाग "गोंडवाना लैंड" प्लेट के हिस्से हैं।

- ***टेथिस सागर-*** *टेथिस सागर गोंडवाना लैंड प्लेट और युरेशियल प्लेट के मध्य स्थित एक सागर के रूप में कल्पित किया जाता है, जो कि एक छिछला और संकरा सागर था / और इसी में जमा अवसादो के प्लेट विवर्तनिकी के परिणामस्वरुप अफ्रीकी और भारतीय प्लेटों के यूरेशियन प्लेट के टकराने के कारण हिमालय और आल्प्स जैसे महान पहाड़ों की रचना हुई है।*

प्रिय छात्रों, अब तक हम अंगारालैंड, गोंडवानालैंड, टेथिस सागर, पेंजिया तथा पेंथाल्जा का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर चुके हैं। अब हम राजस्थान की स्थिति, पृथ्वी पर का अध्ययन करते हैं। नीचे दिए गए मानचित्रों को ध्यान से समझिए-

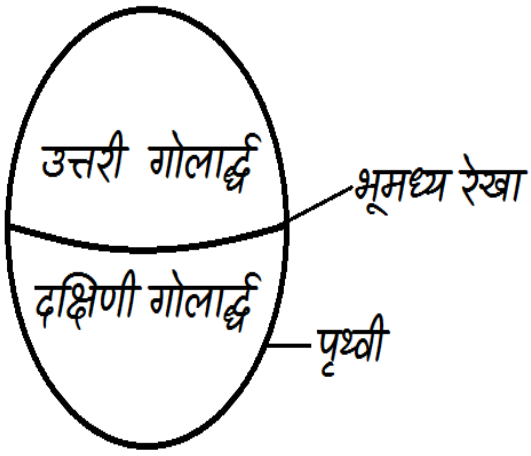

मानचित्र – 1

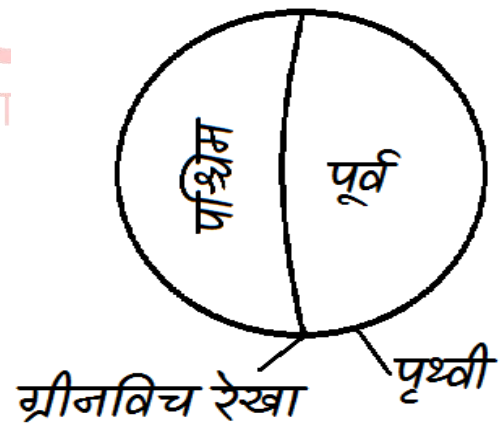

मानचित्र – 3

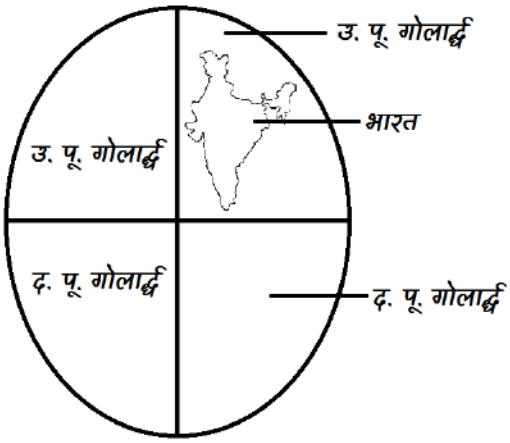

मानचित्र – 2

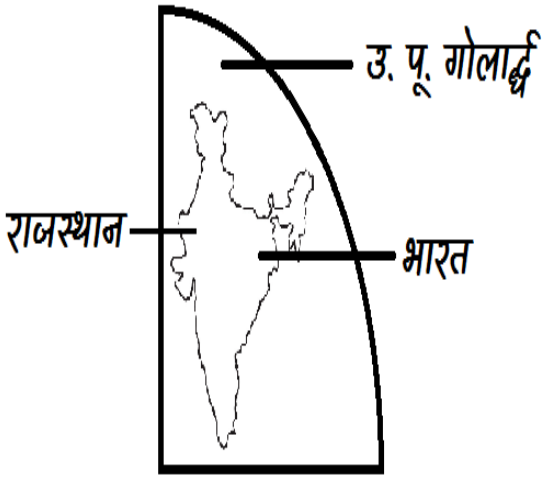

मानचित्र – 4

- प्रिय छात्रों ऊपर दिए गए मानचित्र के बारे में एक बार समझते हैं।

मानचित्र-। पृथ्वी को भूमध्य रेखा से दो भागों में बांटा गया है : –

1. उत्तरी गोलार्द्ध
2. दक्षिणी गोलार्द्ध

इसी प्रकार ग्रीनविच रेखा पृथ्वी को दो भागों में बाँटती है–

1. पूर्वीक्षेत्र
2. पश्चिमीक्षेत्र

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

(देखें मानचित्र– 2)

नोट :-

1. विश्व (अर्थात् पृथ्वी पर) में राजस्थान ("उत्तर पूरब") दिशा में स्थित है। (देखें मानचित्र)
2. एशिया महाद्वीप में राजस्थान ("दक्षिणी पश्चिमी") दिशा में स्थित है। (देखिए मानचित्र – 3,4)
3. भारत में राजस्थान उत्तर-पश्चिम में स्थित है। देखिए मानचित्र -4 (भारत)]

प्रिय पाठकों, अब तक हमने देखा कि राजस्थान शब्द का उद्भव कैसे हुआ? तथा हम ने समझा कि पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति कहां पर है? अब हम अपने अगले बिंदु "राजस्थान का विस्तार" के बारे में पढ़ते हैं-

राजस्थान का विस्तार : - इसका अध्ययन करने से पहले इससे जुड़े हुए कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718

अध्याय – 3

नदियां एवं झीलें

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम लोग "राजस्थान का अपवाह तंत्र" के बारे में अध्ययन करेंगे। सबसे पहले जानते हैं कि क्या होता है "अपवाह तंत्र"?

अपवाह तंत्र -

जब नदी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती हैं तब उसे अपवाह तंत्र कहते हैं अपवाह तंत्र में नदियां एवं उसकी सहायक नदियां शामिल होती हैं।

जैसे गंगा और उसकी सहायक नदियां मिल कर एक अपवाह तंत्र बनाती हैं उसी प्रकार सिधु और उसकी सहायक नदियां जैसे झेलम, रावी, व्यास, चिनाब एक अपवाह तंत्र बनाती है, उसी प्रकार ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियां भी अपवाह तंत्र बनाती हैं। भारत की सबसे लंबी नदी गंगा है तथा सबसे बड़ा अपवाह तंत्र वाली नदी ब्रह्म पुत्र है। अब हम अध्ययन करेंगे राजस्थान के अपवाह तंत्र के बारे में।

राजस्थान में कई नदियां हैं जैसे लूनी, माही, बनास, चंबल इसके अलावा यहां पर स्थित कई झीलें भी इस अपवाह तंत्र में शामिल होती हैं। प्रिय छात्रों जैसा कि आपको पता है राजस्थान में अरावलीपर्वत माला स्थित है यह राजस्थान के लगभग बीच में स्थित है इसलिए यह राज्य की नदियों को स्पष्ट रूप से दो भागों में विभाजित करती है। इसके पूर्व में बहने वाली नदियां अपना जल बंगाल की खाड़ी में तथा इसके पश्चिम में बहने वाली नदियां अपना जल अरब सागर में लेकर जाती हैं। राजस्थान के अपवाह तंत्र को हम दो भागों में विभक्त करेंगे फिर उनके अन्य क्रमशः 4 एवं 3 उप भाग होंगे -

1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण

2. अपवाह के आधार पर वर्गीकरण

1. <u>क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण को चार भागों में बांटा गया है</u> : -

(अ) उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान- इस तंत्र में लूनी, जवाई, सूकड़ी, बांडी,सागी जोजड़ी घघर, कातली नदियां शामिल होती है।

(ब)दक्षिणी - पश्चिमी राजस्थान - इसमें पश्चिमी बनास, साबरमती, वाकल, आदि शामिल होती है।

(स)दक्षिणी राजस्थान - इसमें माही, सोम, जाखम, अनास मोरेन नदियां शामिल होती हैं

(द)दक्षिण पूर्वी राजस्थान - इसमें चंबल, कुंनु, पार्वती काली सिध, कुराल, आहू, नेवज, परवन, मेंज, गंभीरी, छोटी काली सिध, ढीला, खारी, माशी, काली सिल आदि नदियां शामिल होती हैं।

2. अपवाह के आधार पर वर्गीकरण :- प्रिय छात्रों नदियों के विभाजन का सबसे अच्छा तरीका है और इसी आधार पर नदियों को तीन भागों में बांटा गया है -

(अ) बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ : -

इस अपवाह तंत्र में निम्न प्रमुख नदियां शामिल होती हैं जैसे चंबल, बनास, काली सिध, पार्वती, बाण गंगा, खारी, बेडच, गंभीरी आदि। ये नदियां अरावली के पूर्व में बहती हैं इनमें कुछ नदियों का उद्गम स्थल अरावली का पूर्वी घाट तथा कुछ का मध्यप्रदेश का विध्याचल पर्वत है यह सभी नदियां अपना जल यमुना नदी के माध्यम से बंगाल की खाड़ी में ले जाती हैं।

(ब)अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ -

इस अपवाह तंत्र में इन निम्न प्रमुख नदियां शामिल है जैसे माही, सोम, जाखम, साबरमती, पश्चिमी बनास, लूणी, इत्यादि ।पश्चिमी बनास, लूनी गुजरात के कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती हैं, ये सभी नदियां अरबसागर की ओर अपना जल लेकर जाती हैं।

(स)**अंत: प्रवाह वाली नदियां : -**

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियां और अरब सागर में गिरने वाली नदियों के अलावा कुछ छोटी नदियां भी हैं जो कुछ दूरी तक प्रवाह होकर राज्य में अपने क्षेत्र में विलुप्त हो जाती हैं तथा उनका जल समुद्र तक नहीं जा पाता इसलिए इन्हें आंतरिक प्रवाह वाली नदियां कहा जाता है जैसे काकनी, कांतली, साबी घग्गर, मेंथा, बांडी, रूपनगढ़ इत्यादि

राजस्थान राज्य की नदियों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य जो की परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है -

राजस्थान की अधिकांश नदियों का प्रवाह क्षेत्र अरावली पर्वत की पूर्व में है

- राजस्थान में चंबल तथा माही के अलावा अन्य कोई नदी बारह मासी नहीं है
- राज्य में चूरू व बीकानेर ऐसे जिले हैं जहां कोई नदी नहीं है।
- गंगानगर में यद्यपि पृथक से कोई नदी नहीं है लेकिन वर्षा होने पर घग्गर नदी का बाढ़ का पानी सूरतगढ़, अनूपगढ़ तक चला जाता है
- राज्य के 60% भू - भाग पर आंतरिक जल प्रवाह का विस्तार है।
- राज्य में सबसे अधिक सतही जल चंबल नदी में उपलब्ध है।
- राज्य में बनास नदी का जल ग्रहण क्षेत्र सबसे बड़ा है।
- राज्य में सर्वाधिक नदियां कोटा संभाग में बहती हैं
- राज्य की सबसे बड़ी नदी चंबल है।
- राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं।
- रेगिस्तान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं।
- पश्चिमी राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं।
- मारवाड़ की जीवन रेखा लूनी नदी को कहते हैं।
- बीकानेर की जीवन रेखा कंवर सेन लिफ्ट परियोजना को कहते हैं।
- राजसमंद की जीवन रेखा नंद समंद झील कहलाती है।
- भरतपुर की जीवन रेखा मोती झील है।
- गुजरात की जीवन रेखा नर्मदा परियोजना है।

- जमशेदपुर की जीवन रेखा स्वर्ण रेखा नदी को कहा जाता है, इस नदी पर हुंडरू जल प्रपात स्थित है।

- आदिवासियों की या दक्षिणी राजस्थान की जीवन रेखा माही नदी को कहा जाता है।

- पूरे राज्य में बहने वाली सबसे बड़ी नदी बनास है।

- भारत सरकार द्वारा राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड की स्थापना की गई थी। 1955 में इस बोर्ड का नियंत्रण राजस्थान सरकार को सौंपा गया था। 1971 से इस बोर्ड को भू - जल विभाग के नाम से जाना जाता है इसका कार्यलिय जोधपुर में है।

- राज्य के पूर्णता बहने वाली सबसे लंबी नदी का सर्वाधिक जल ग्रहण क्षेत्र वाली नदी बनास है।

- चंबल नदी पर भैंसरोडगढ़ (चित्तौड़गढ़) के निकट चूलिया जल प्रपात तथा मांगली नदी पर बूंदी में "भीमलत प्रपात" है।

- सर्वाधिक जिलों में बहने वाली नदियां चंबल, बनास, लूणी है जो कि प्रत्येक नदी 6 जिलों में बहती है।

- अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाली नदी एक मात्र नदी है चंबल ,जो कि राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा बनाती है।

- राजमहल (टोंक) नामक स्थान पर बनास, डाई और खारी नदी का त्रिवेणी संगम स्थित है यहां शिव एवं सूर्य की संयुक्त प्रतिमा स्थित है जो मार्तंड भैरव मंदिर या देवनारायण मंदिर के नाम से जाना जाता है यहां नारायण सागर बांध स्थित है।

प्रिय छात्रों अब हम प्रत्येक अपवाह तंत्र को विस्तृत रूप से समझते हैं। सबसे पहले हम बंगाल की खाड़ी की ओर चले जाने वाली नदियों का अध्ययन करेंगे -

1. **चंबल नदी** –प्रिय छात्रों चंबल नदी के बारे में हम समझते हैं कि क्या है इसकी महत्वपूर्ण विशेषताएं : -

- चंबल नदी राजस्थान की एक मात्र ऐसी नदी है, जो प्राकृतिक अंतर्राज्यीय निर्धारित करती है इस नदी को अन्य नामों से भी जाना जाता है । इसके अन्य नाम -चर्मणवती नदी, कामधेनु नदी, बारहमासी नदी, नित्य वाहिनी नदी ।

- इस नदी की कुल लंबाई 966 किलो मीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश अर्थात 3 राज्यों में बहती है यह नदी मध्यप्रदेश में 335 किलो मीटर, राजस्थान में 135 किलो मीटर, उत्तरप्रदेश में 275 किलो मीटर बहती है यह नदी राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश के मध्य 241 किलो मीटर की अंतर्राज्यीय सीमा भी

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718

राजस्थान की प्रमुख झीलें -

प्रिय छात्रों राजस्थान की झीलों को हम दो भागों में विभाजित करेंगे -

(अ)खारे पानी की झीलें, (ब) मीठे पानी की झीलें

दोस्तों जैसा कि आपको पता है खारे पानी की झील से आशय ऐसी झील से होता है जिसमें लवणता की मात्रा होती है और मीठे पानी की झील अर्थात एक ऐसी झील जिसमे लवणता की मात्रा नहीं पाई जाती है। प्रिय छात्रों जैसा कि आपको पता है कि अरावली पर्वत माला राजस्थान के लगभग बीच में स्थित है जिसके पश्चिम में खारे पानी की झीलें हैं और इसके पूर्व में मीठे पानी की झीलें स्थित है। यह अरावली पर्वत माला महान जल विभाजक रेखा का कार्य करती है। राजस्थान में खारे पानी की 9 झीलें हैं।

राजस्थान का पश्चिमी भाग टेथिस सागर का अवशेष है अतः इस क्षेत्र में पाई जाने वाली झीलें खारे पानी की झीलें है। रेगिस्तानी क्षेत्र में खारे पानी की झीलों को प्लाया कहा जाता है तथा तटीय क्षेत्र में इन्हें "लैगून" कहा जाता है जैसे उड़ीसा में स्थित चिल्का झील सबसे बड़ी लैगून झील है।

दोस्तों झीलों के खारा होने का एक अन्य कारण यह भी है कि दक्षिण पश्चिमी मानसून की अरब सागर की शाखा राज्य में प्रवेश करते समय लवण के भारी कणों को पश्चिमी भाग में गिरा देती है जिससे यहां की मिट्टी तथा झीलों में खारा पानी पाया जाता है। राजस्थान की समस्त खारे पानी की झीलें वायु द्वारा निर्मित हुई है। दक्षिण एशिया में पहली बार विश्व झील सम्मेलन का आयोजन 28 अक्टूबर से 2 नवंबर 2007 को भारत में जयपुर में ही किया गया था।

अब हम खारे पानी की झीलों को सबसे पहले विस्तार में समझते हैं और फिर मीठे पानी की झीलों को पढ़ेंगे।

(अ) खारे पानी की झीलें -

1. **सांभर झील**

- राजस्थान के जयपुर – फुलेरा मार्ग पर जयपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर स्थित सांभर झील भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक एवं खारे पानी की झील है।
- इस झील का विस्तार 3 जिलों में है - जयपुर, अजमेर और नागौर, लेकिन सर्वाधिक विस्तार जयपुर जिले में है और इसका प्रशासनिक अधिकार नागौर जिले का है।
- इस झील की लंबाई दक्षिण पूरब से उत्तर पश्चिम की ओर लगभग 32 किलो मीटर है और चौड़ाई 3 से 12 किलोमीटर है इसका कुल अपवाह क्षेत्र 500 वर्ग किलोमीटर है।
- सांभर झील में मेंथा नदी, रूपनगढ़ नदी, खारी नदी और खंडेला नदी आकर मिलती हैं।इस झील पर भारत सरकार की "हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड कंपनी" द्वारा उत्पादन कार्य किया जा रहा है।इस झील में प्रति 4 मीटर की गहराई पर 350 लाख टन उत्पादन होता है जो भारत के कुल उत्पादन का 8.7% सांभर झील से ही उत्पादित होता है।

इस झील से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -

- सांभर झील "स्वाईसरुबीना"नामक शैवालों के लिए प्रसिद्ध है।इस शैवाल से 60% प्रोटीन प्राप्त होता है।
- यह झील अन्य महत्व पूर्ण बिन्दुओं के लिए भी जानी जाती है जैसे -

तीर्थ स्थली देव्यानी अर्थात तीर्थों की नानी,

शाकंभरी माता का मंदिर,

संत हिमामुद्दीन की पुण्य भूमि,

जहांगीर की ननिहाल,

अकबर की विवाह स्थली

चौहानों की राजधानी

- ऐसा माना जाता है कि इस झील का निर्माण बिजोलिया शिलालेख के अनुसार चौहान वंश के संस्थापक वासुदेव चौहान द्वारा करवाया गया था।
- इस झील का आकार आयताकार है ।इस झील पर सन् ।४ऽ7 में अंग्रेजों द्वारा स्थापित सांभर साल्ट म्यूजियम स्थित है।
- पर्यटन के क्षेत्र में रामसर साइट के नाम से भी इसे जाना जाता है।

2. **<u>पचपदरा झील</u>** : -

- ऐसा माना जाता है कि ५०० ईसा पूर्व पंचानामक एक भील व्यक्ति के द्वारा एक दलदल को सुखाकर इस झील के आसपास की बस्तियों का निर्माणाक रवाया गया था इसलिए इस झील को पचपदरा झील कहते हैं
- यह झील राजस्थान राज्य के बाड़मेर जिले के बालोत्तरा में स्थित है।
- इस झील से प्राचीन समय से हीखा रवालजाति के ५०० परिवार मोरली वृक्ष की टहनियों से भी नमक के क्रिस्टल तैयार करते थे।
- इस झील में १४% सोडियम क्लोराइड की मात्रा पाई जाती है इस झील का नमक खाने के लिए सबसे उपयुक्त

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 5

मृदा क्षेत्र विस्तृत भौतिक खण्ड

प्रिय पाठकों इस अध्याय के अंतर्गत हम राजस्थान की मिट्टियों का अध्ययन करेंगे और समझेंगे की मृदा मानव जीवन के लिए किस प्रकार से उपयोगी हे /

मृदा मानव जीवन का मूल आधार है अतः सभी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का विकास मिट्टी से हुआ है।

मृदा संसाधन मानव जीवन को प्रभावित करता है जिन स्थानों पर मिट्टी अधिक उपजाऊ होती है वहां मनुष्य जीवन अधिक एवं जहां अनुपजाऊ होती है वहां मनुष्य का आवास कम पाया जाता है।

इसलिए कहा जा सकता है कि मृदा संसाधन एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है।

मृदा :- भू - पृष्ठ पर असंगठित पदार्थों की वह ऊपरी परत जो कि मूल चट्टानों या वनस्पति के योग से निर्मित होती है। मृदा कहलाती है।

निष्कर्ष:- वर्तमान समय में मृदा अपरदन मरुस्थलीय मृदा प्रदूषण कंक्रीट के जंगलों का विस्तार (बढ़ता हुआ शहरीकरण) अत्यधिक मानवीय हस्तक्षेप अवैज्ञानिक कृषि,अवैज्ञानिक खनन कार्य इत्यादि के द्वारा हजारों वर्षों से निर्मित हमारी अमूल्य धरोहर का विनाश हो रहा है। अतः वैज्ञानिक कृषि कार्य, वैज्ञानिक पशुपालन, मानवीय हस्तक्षेप पर रोक, वैज्ञानिक खनन कार्य, आवास शहरीकरण आदि को अपनाकर एवं धारणीय विकास व पर्यावरण मित्र विकास को अपनाते हुए हमारी इस अमूल्य धरोहर का संरक्षण व संवर्धन किया जा सकता है।

राजस्थान में मृदा का वर्गीकरण दो प्रकार से किया गया है -

I. **सामान्य वर्गीकरण:-** इसमें मिट्टी को रंग के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।
   i. रेतीली मिट्टी
   ii. भूरी रेतीली मिट्टी / भूरी पीली मिट्टी

III. लाल मिट्टी

IV. लाल काली मिश्रित मिट्टी

V. लाल पीली मिट्टी

VI. काली मिट्टी / मध्यम काली मिट्टी

VII. जलोढ़ मिट्टी / दोमट / कछारी मिट्टी

VIII. भूरी दोमट मिट्टी

IX. पर्वतीय मिट्टी

X. लवणीय मिट्टी

2. 1992 में अमेरिका में वैज्ञानिकों द्वारा वैज्ञानिक आधार पर मिट्टी को 11 भागों में बांटा था जिसमें, से राजस्थान में पांच प्रकार की मिट्टी पाई जाती है।

I. वर्टिसोल (Vertisoil)

II. एरिडोसोल (Eridosoil)

III. अल्फिसोल (Alfisoil)

IV. एंटिसोल (Antisoil)

V. इन्सेप्टीसोल (Anseptisoil)

सामान्य वर्गीकरण के आधार पर:-

1) रेतीली मिट्टी / बलुई मिट्टी / मरुस्थली मिट्टी:-

- यह मिट्टी जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर, चूरु जिले में विस्तृत है।
- इस मिट्टी के कण मोटे होने के कारण इसमें जल धारण करने की क्षमता सबसे कम पाई जाती है।
- इस मिट्टी में नाइट्रोजन व कार्बनिक पदार्थों की कमी परंतु कैल्शियम के तत्व की प्रधानता पाई जाती है।

- इस मिट्टी में मुख्य रूप से मोटे अनाजों का उत्पादन जैसे ग्वार, मोठ, बाजरा आदि का उत्पादन होता है।

2) **<u>भूरी रेतीली मिट्टी / भूरी पीली मिट्टी</u>** :- यह मिट्टी मुख्य रूप से सीकर, चूरू, झुंझुनू, नागौर, पाली, जालौर में विस्तृत है।

इस मिट्टी में नाइट्रोजन एवं कार्बनिक पदार्थों की कमी एवं फॉस्फोट के तत्वों की प्रधानता पाई जाती है।

इस मिट्टी में मुख्य रूप से ज्वार, बाजरा, मक्का, ईसबगोल, जीरा, मेहंदी, सरसों, जौ, गेहूं आदि का उत्पादन होता है।

3) **<u>लाल लोमी मिट्टी</u>**:- यह मिट्टी मुख्य रूप से उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़, राजसमंद, सिरोही आदि जिलों में पाई जाती है।

इस मिट्टी में नाइट्रोजन, कैलशियम, फास्फोरस के तत्वों की कमी एवं लोहा व पोटाश के तत्व की प्रधानता पाई जाती है।

इस मिट्टी में लोहे के तत्व अधिक होने के कारण इसका रंग गहरा लाल हो जाता है।

इस मिट्टी में मुख्य रूप से मक्का की खेती की जाती है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718

अध्याय – 8

दरिद्रता , सूखा , अकाल और मरुस्थलीकरण की समस्याएं

राजस्थान में गरीबी का आकलन

- मिक्स रिकॉल पीरियड के अनुसार वर्ष 2004-05 में राजस्थान में गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या 107.18 लाख (17.15%) है। NSSO के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में यह 66.69 लाख या 14.3

  प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 40.50 लाख या 28.10 प्रतिशत है।
- एन.एस.एस.ओ. के 68वां चक्र से प्राप्त सूचना के आधार पर राजस्थान में गरीबों की संख्या एवं उनके अनुपात का आकलन तालिका में दिया गया है।

तेंदुलकर पद्धति से राजस्थान में गरीबी प्रतिशत

सर्व वर्ष	ग्रामीण	शहरी	कुल
1993-94	26.46	30.49	27.41
1999-2000	13.74	19.85	15.28
2004-05	35.8	29.7	34.4
2009-10	26.4	19.9	24.8
2011-12	16.5	10.69	14.71
2009-10 से 2011-12 में कमी	10.3	9.2	10.1

स्रोत : (1) आर्थिक सर्वेक्षण 2015-16 (2) योजना आयोग (भारत सरकार) (3) A Report of Task Force on Elimination of Poverty in Rajasthan

(GOR), Sent to Niti Ayog on 15.05.2015

- राजस्थान में वर्ष 2009-10 में ग्रामीण क्षेत्र में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन ₹25.16 (प्रतिमास ₹755) व शहरी क्षेत्र में ₹28.2 (प्रतिमास ₹846) के उपभोग खर्च को गरीबी रेखा का निर्धारिक मान माना गया।
- राजस्थान में 2004-05 से 2009-10 के मध्य ग्रामीण गरीबी 9.4% तथा शहरी गरीबी में 9.8% की तथा कुल गरीबी में 9.6% बिंदु की कमी दर्ज की गई। इस दौरान राज्य में 42.08 लाख लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाया गया। देश में बीपीएल गिरावट (5 करोड़ लोग) में राजस्थान का 8.06% योगदान रहा।

फार्मूले से राजस्थान में निर्धनता अनुपात

Year	निर्धनों की संख्या			निर्धनता अनुपात		
	ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी	कुल
2009-2010	161.6	64.1	225.7	31.9	38.5	33.5
2011-2012	112.0	39.5	151.5	21.4	22.5	21.7
2009-10 की तुलना में 2011-12 में कमी	49.6	24.6	74.2	10.5	16.0	11.8

तेंदुलकर फार्मूले से राजस्थान में निर्धनता अनुपात

Year	निर्धनों की संख्या			निर्धनता अनुपात		
	ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी	कुल
2009-2010	133.8	33.2	167.0	26.4	19.9	24.8

2011-2012	84.2	18.7	102.9	16.1	10.7	14.7
2009-10 की तुलना में 2011-12 में कमी	49.6	14.5	64.1	10.3	9.2	10.1

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718

राजस्थान में सूखा एवं अकाल और मरुस्थलीकरण -

राजस्थान में अकाल का मुख्य कारण वर्षा की अनिश्चितता एवं अनियमितता है|

राजस्थान के जलवायु की विषमता, वनों के स्वरूप, धरातल की स्थिति की स्थिति तथा अरावली श्रृंखला की दिशा मानसूनी हवाओं के समान्तर होने के कारण भी अकाल एवं सूखे की स्थिति रहती है| 1987 ई. का अकाल बीसवीं सदी का सबसे भयंकर अकाल था| इस अकाल ने त्रिकाल का रूप धारण कर लिया था|

अकाल के प्रकार

a. अन्नकाल:- अन्न का अभाव|
b. जल काल:- जल का अभाव|
c. तृण काल:- पशुओं के लिये चारे एवं घास का अभाव|
d. त्रिकाल:- इस प्रकार के अकाल में अन्न चारे व पानी का भयंकर संकट उत्पन्न हो जाता है| सन् 1987 में इस प्रकार का अकाल पड़ा था|

1952 से 2016 तक निम्न वर्षों में अकाल नही पड़ा:- 1959-60, 1973-74, 1975-76, 1976-77, 1990-91, 1994-95

वर्ष 2000-1 में धौलपुर को छोड़कर राजस्थान के सभी जिले अकाल से प्रभावित रहें| वर्ष 2009-10 में राजस्थान के 27 जिले अकाल से प्रभावित हुए|

अकाल के कारण

प्राकृतिक कारण

a. शुष्क जलवायु
b. वर्षा की अपर्याप्तता एवं अनियमितता
c. वनों की कमी
d. उच्च तापमान
e. नियतवाही नदियों का अभाव
f. अनाच्छादन से बालू की मात्रा में वृद्धि और विस्तार

मानवीय कारण

- वनों की अनियंत्रित और अतार्किक कटाई
- भू-जल का अंधाधुंध विदोहन
- प्रदूषण समस्या
- पेयजल की कमी
- पारिस्थितिक असंतुलन

आर्थिक कारण

- सीमित संसाधन
- जनसंख्या वृद्धि का बोझ
- मरुस्थली प्रदेश की पिछड़ी अर्थव्यवस्था
- पशुओं की संख्या में वृद्धि

अकाल के दुष्परिणाम

- कृषि फसलों का नष्ट होना
- वनों का विनाश
- वस्तुओं की माँग में कमी
- जनता की क्रय-शक्ति में ह्रास
- श्रमिकों की कार्यक्षमता में कमी
- बेरोजगारी

औद्योगिक उत्पादन में

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

राजस्थान के प्राकृतिक संसाधन

अध्याय – 9

खान एवं खनिज

खनिज

खनिज या खनिज पदार्थ ऐसे भौतिक पदार्थ हैं जो खान से खोद कर निकाले जाते हैं। कुछ उपयोगी खनिज पदार्थों के नाम हैं – लोहा, अभ्रक, कोयला, बॉक्साइट (जिससेअलुमिनियम बनता है), नमक (पाकिस्तानव भारत के अनेक क्षेत्रों में खान से नमक निकाला जाता है), जस्ता, चूना पत्थर इत्यादि।

पृथ्वी की भूपर्पटी में पाई जाने वाली यौगिक जिन में धातुओं की मात्रा पाई जाती है वे खनिज कहलाते हैं।

राजस्थान में खनिज संसाधन –

प्रिय छात्रों राजस्थान में कई प्रकार के खनिज पाए जाते हैं।

जैसा कि आपको पता है राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है यहां पाई जाने वाली अधिक विविधताओं के कारण या यह राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से एक संपन्न राज्य है। और इसी वजह से इसे "खनिजों का अजायबघर" भी कहा जाता है। दोस्तों खनिज भंडार की दृष्टि से राजस्थान का देश में झारखंड के बाद दूसरा स्थान आता है जबकि खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि से झारखंड, मध्यप्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है। राजस्थान में कुल होने वाले देश के खनन क्षेत्र का ५.7% क्षेत्रफल आता है। देश में सर्वाधिक खाने राजस्थान में स्थित है। देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान 22% है।

राजस्थान में ४० से अधिक खनिज पाए जाते हैं आइए जानते हैं कौन कौन से खनिज यहां पाए जाते हैं।

1. ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का एकाधिकार है -

   पन्ना, जास्पर, तामड़ा, वोलेस्टोनाइट

2. ऐसे खनिज जिनके उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है -

जस्ता - 97%, फ्लोराइड 96 %, एबेस्टोस 96 %, रॉकफोस्फेट 95%, जिप्सम 94 % चुनापत्थर 94%, खड़ियामिट्टी 92%,घीयापत्थर 90 %, चांदी 80%, मकराना (मार्बल) 75%, सीसा 75%, फेस्फार 75%, टंगस्टन 75%, कैल्साइट 70%, फायरक्ले 65%, ईमारतीपत्थर 60%, बेंटोनाइट 60%, कैडमियम 60%

3. वे खनिज जिनकी राजस्थान में कमी है - लोहा, कोयला, मैंगनीज, खनिज तेल, ग्रेफाइट

राजस्थान में पाए जाने वाले खनिजों को तीन प्रकारों में बांटा जा सकता है -

1. धात्विक खनिज - लौहअयस्क, मैंगनीज, टंगस्टन, सीसा, जस्ता, तांबा, चांदीइत्यादि।
2. अधात्विक खनिज - अभ्रक, एस्बेस्ट स, फेल्सपार, बालुका मिट्टी, चूनापत्थर, पन्ना, तामड़ा इत्यादि।
3. ईंधन - कोयला, पेट्रोलियम, खनिज इत्यादि।

दोस्तों खनिजों की दृष्टि से राजस्थान में अरावली प्रदेश और पठारी प्रदेश काफी समृद्ध है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

धात्विक खनिज -

1. **लोहा** –राजस्थान में लोहा मुख्य रूप से अरावली के उत्तर – पूरब एवं दक्षिण- पूरब में पाया जाता है।

लौहा अयस्क चार प्रकार का होता है-

i. मैग्नेटाइट-74 %

ii. हेमेटाइट- 64 %

iii. लिमोनाइट- 50 %

iv. सिडेराइट- 40%

राजस्थान में मुख्य रूप से लौहे का उत्पादन निम्न स्थानों पर होता है एवं राजस्थान में हेमेटाइट वलिमोनाइट लौह अयस्क पाया जाता है।

प्रमुखखान-

- मोरीजा- बानोल- जयपुर
- नीमला- रायसेला- दौसा
- सिघाना- डाबना–झुंझुनू
- नीमकाथाना- सीकर
- धूरहुण्डेर- उदयपुर
- नाथराकीपाल–उदयपुर

राजस्थान में सबसे अधिक लौहे का उत्पादन जयपुर जिले से होता है। यह हेमेटाइट प्रकार का है।

2. सीसा-जस्ता :-सीसे जस्ते के अयस्क को गेलेनाक हा जाता है। यह अयस्क मिश्रित रूप में मिलने के कारण इसे जुड़वा खनिज भी कहते हैं।

राजस्थान में जिन स्थानों पर सीसे–जस्ते का उत्खनन होता है उन्हीं स्थानों से चांदी व तांबा का उत्खनन होता है।

प्रमुख खान-

- जावर खान- उदयपुर

यह देश की सबसे बडी जस्ते की खान

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718

राजस्थान के ईंधन खनिज

1. कोयला

राजस्थान में कोयले के कुल भण्डार 105 करोड टन है।

राजस्थान में लिग्नाइट कोयले का उत्पादन होता है, जिसे भूरा कोयला भी कहते है।

प्रमुख उत्पादन क्षेत्र

1. बाडमेर- 60 करोड टन भण्डार {कपूर डी, जालि पाक, गिरल, भादका}

2. बीकानेर- 23 करोड टन {पलाना, नापासर, बिथनोक, गुरहा}

3. नागौर- 20करोडटन {बरसिहपुरा}

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट:

1. सर्वाधिक कोयले का उत्पादन कपूर डी (बाडमेर) से एवं सबसे उत्तम किस्म का कोयला पलाना (बीकानेर) से

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – II

पशु संसाधन

पशुपालन

राजस्थान में 20 वीं पशुगणना

- 20 वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान में कुल पशुधन 56.8 मिलियन (5.68 करोड़) है। जो कि 2012 की 577 लाख (5.77 करोड़) था। इस प्रकार 2019 में कुल पशुओं की संख्या में 1.66 प्रतिशत की कमी देखी गई है।
- राजस्थान 568 लाख पशुओं के साथ भारत में दूसरे स्थान पर है। पहला स्थान उत्तर प्रदेश का है।
- राजस्थान गोवंश के मामले में 2012 के 133 लाख की तुलना में 2019 में 139 लाख पशुओं के साथ छठे स्थान पर है। गोवंश में 4.41% की वृद्धि हुई है।
- राजस्थान भैंसो के मामले में 2012 के 130 लाख की तुलना में 2019 में 137 लाख पशुओं के साथ दूसरे स्थान पर है। भैंसों में 5.53% की वृद्धि हुई है।
- राजस्थान भेड़ की संख्या के मामले में 2012 के 9.1 मिलियन की तुलना में 2019 में 79 लाख पशुओं के साथ चौथे स्थान पर है। भेड़ में 5% की कमी हुई है।
- राजस्थान बकरी के मामले में 2012 के 216.7 लाख की तुलना में 2019 में 208.4 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। बकरियों की संख्या में 3.81% की कमी हुई है।
- राजस्थान ऊंट के मामले में 2012 के 326लाख की तुलना में 2019 में 213 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। ऊंटों की संख्या में 34.69% की कमी हुई है।
- राजस्थान घोड़ों के मामले में 2012 के 38 लाख की तुलना में 2019 में 34 लाख पशुओं के साथ तीसरे स्थान पर है। घोड़ों की संख्या में में 10.85% की कमी हुई है।
- राजस्थान गधों के मामले में 2012 के 81 लाख की तुलना में 2019 में 23 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। गधों में 71.31% की कमी हुई है।

पशु	कुल संख्या (लाख)	अधिकतम	न्यूनतम
बकरी	208.4	बाड़मेर	धौलपुर

गाय	139	उदयपुर	धौलपुर
भैंस	137	जयपुर	जैसलमेर
भेड़	79	बाड़मेर	बांसवाड़ा
उंट	21.3	जैसलमेर	प्रतापगढ़
गधे	23	बाड़मेर	टोंक
घोड़े	34	बीकानेर	डूंगरपूर

राजस्थान में गाय की विभिन्न नस्लें

1. **गीर** – यह अजमेर भीलवाड़ा किशनगढ़ चित्तौड़गढ़ बूंदी आदि में पाई जाती है। मूल स्थान गुजरात है ।इसका अन्य नाम अजमेरी

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718

अध्याय – 14

कृषि आधारित उद्योग

सूती वस्त्र उद्योग

- अविभाजित भारत में ढाका की मलमल विश्व प्रसिद्ध थी।
- सूती वस्त्र उद्योग राजस्थान का सबसे प्राचीन संगठित उद्योग है।
- यह उद्योग कृषि पर सर्वाधिक आधारित है।
- श्रीगंगानगर में सर्वश्रेष्ठ किस्म की कपास बोई जाती है एवं सर्वाधिक उत्पादन होता है। यहाँ विश्व बैंक की सहायता से सरकारी क्षेत्र में कॉटन कॉम्पलेक्स की स्थापना की गई है।
- बहरोड़(अलवर) में सिथेटिक फाइबर की एक मेल स्थापित की गई है।
- भीलवाड़ा में सर्वाधिक सूती वस्त्र मिले है। जिस कारण भीलवाड़ा को राजस्थान का मैनचेस्टर कहा जाता है। यहाँ कंप्यूटर एडेड डिज़ाइन सेट(पावरलूम उद्योग में) स्थापित किया गया है।
- श्री कृष्णा मिल्स ब्यावर की स्थापना सेठ दामोदर दास द्वारा की गई। यह राज्य की प्रथम सूती मिल(निजी क्षेत्र में 1890 में स्थापित) है। यह मिल्स कार्यशील करघों की दृष्टि से सबसे बड़ी सूती वस्त्र मिल है। यह अब सार्वजानिक क्षेत्र में आ गई है।
- महाराजा उमेद सिह मिल्स लिमिटेड(पाली)- वर्तमान में राजस्थान की सबसे बड़ी सूती वस्त्र मिल है।
- सार्वजनिक क्षेत्र की सूती वस्त्र मिले है- 1. एडवर्ड मिल्स(ब्यावर), 2. महालक्ष्मी मिल्स(ब्यावर), 3. श्री विजय कॉटन मिल्स(विजयनगर)।
- पावर लूम सेंटर- किशनगढ़ व भीलवाड़ा।

ऊनी वस्त्र उद्योग

- ऊन उत्पादन में राजस्थान का देश में प्रथम स्थान है।
- 1965 में बीकानेर में ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला स्थापित की गई। यहाँ एशिया की सबसे बड़ी ऊन मंडी स्थित है।
- बीकानेर में सर्वाधिक ऊन उत्पादित होती है।

- वूल टेस्टिग प्रयोगशाला वस्टेट वूलन मिल्स बीकानेर में स्थित है।
- इंडस्ट्रियल सर्विस सेंटर, भारत वूलन मिल्स व फ्रेंड्स वूलन मिल्स बीकानेर में स्थित है।
- अखिल भारतीय ऊन विकास बोर्ड द्वारा अक्टूबर, 1992 में बीकानेर में गलीचा प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की गई है।

जोधपुर में 1947 में केंद्रीय ऊन विकास बोर्ड

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें - 8233195718

अध्याय – 16

मरुस्थल एवं बंजर भूमि के विकास के लिए परियोजनाएं

राजस्थान के **उत्तरी पश्चिमी भाग** में स्थित 13 जिलों में से **12 जिले मरुस्थलीय** हैं जिनका विस्तार **उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व** की ओर लगभग **640 किमी.** तथा पश्चिम से पूर्व की ओर लगभग 300 किमी. भू-भाग पर है। इसका क्षेत्रफल लगभग **1,75,000 वर्ग किमी.** है जिसमें राज्य के लगभग **40%** **जनता** निवास करती है।

राज्य के **गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, चूरू, सीकर, झुंझुनू, नागौर, जैसलमेर, जोधपुर, पाली, बाड़मेर तथा जालौर** इस मरू क्षेत्र में आते है। राजस्थान का मरु प्रदेश वर्षा की अल्प मात्रा के कारण प्राय: सूखा एवं अकाल से पीड़ित रहता है।

1962 के भू-सर्वेक्षण के अनुसार वैज्ञानिकों का मानना है कि यह मरु क्षेत्र गंगा-सिंधु के उपजाऊ मैदान का ही भाग है। स्वतंत्रता के पश्चात् से ही मरु प्रदेश को विकसित करने के प्रयास किये जा रहें है जिसमे निम्नलिखित कार्यक्रम प्रारंभ किये गए है-

इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना

31 मार्च, 1958 को परियोजना का शिलान्यास किया गया, जबकि 2 नवम्बर 1984 को इसका नाम इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना कर दिया गया। मरु क्षेत्र विकास की दृष्टि से यह योजना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इसको राजस्थान की जीवन रेखा या मरु गंगा भी कहा जाता है।

मरु विकास कार्यक्रम

1977-78 ई. में केंद्र सरकार की 100% सहायता से प्रारंभ किया गया कार्यक्रम। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मरुस्थल के विस्तार को रोकना तथा मरु क्षेत्र का आर्थिक विकास करना है।

इस कार्यक्रम हेतु 1 अप्रैल, 1999 से कोष आवंटन का तरीका बदलकर 75% केंद्र सरकार व 25% राज्य सरकाए द्वारा देय कर दी गई है। वर्तमान में यह कार्यक्रम 16 मरुस्थलीय जिलों के 85 विकास खण्डों में क्रियान्वित किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत भूमि एवं जल संरक्षण भू-जल अन्वेषण एवं दोहन, चरागाह विकास, वन विकास, सिचाई, डेयरी विकास, पशु स्वास्थ्य, सिल्वी पास्टोरल रोपण स्थली, टीलों का स्थिरीकरण आदि क्षेत्रों में प्रोत्साहन दिया गया।

मरुकरण संघाती परियोजना

1999-2000 से क्रियान्वित। 10 मरुस्थली जिलों में संचालित किया गया है।

मरुस्थल वृक्षारोपण शोध केंद्र

1952 में जोधपुर में स्थापना की गई थी।

केन्द्रीय मरु क्षेत्र अनुसंधान संस्थान(काजरी)

1959 में जोधपुर में स्थापना की गई। काजरी मरुस्थल के प्रसार को रोकने तथा वहां कृषि की उपज में वृद्धि से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिये शोध कार्य संपन्न करता है।

मरु प्रसार रोकथाम कार्यक्रम

1999-2000 से संचालित भारत सरकार की 75% भागीदारी से राजस्थान के 10 मरुस्थलीय जिलों में टीबा स्थिरीकरण हेतु

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

I. इतिहास और संस्कृति – निम्नलिखित के विशिष्ट सन्दर्भ के साथ भारत और राजस्थान के मुख्य स्मारक तथा साहित्यिक कृति इतिहास और संस्कृति –

(अ) इतिहास और संस्कृति (भारत के सन्दर्भ में)

अध्याय – I

प्राचीन भारत का इतिहास

- **सिन्धु घाटी सभ्यता**

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया।
- सबसे पहले 1921 में हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा की गई थी।
- सिन्धु घाटी सभ्यता को अन्य नामों से भी जानतें हैं।
- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया
- सिन्धु सभ्यता - माटियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा।
- सरस्वती सभ्यता भी कहा गया।
- मेलूहा सभ्यता भी कहा गया।
- कांस्यकालीन सभ्यता भी कहा गया।
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे हैं। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं।
- 1902 में लार्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हडप्पा की खोज की।

- 1922 में राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों की खोज की।
  - 20 सित० 1924 को जॉन मार्शल ने द इलस्ट्रेटेड लन्दन न्यूज' के माध्यम से इस सभ्यता की खोज की घोषणा की।

सिन्धु सभ्यता की प्रजातिया—

- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ो की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक
- मंगोलियन - मोहनजोदडो से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है।
- अल्पाइन प्रजाति।

<u>सिन्धु सभ्यता की तिथि</u>

- कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
- ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
- मार्शल- 3250-2750 ई.पू.

इस सभ्यता का विस्तार

- इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान और भारत में ही मिलता है।

<u>पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल</u>

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट
- ***<u>सुत्कांगेडोर</u>***- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है। इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हडप्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते है।

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- ***हरियाणा***- राखीगढी, सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- ***पंजाब*** – कोटलानिहंग खान चक ४६ बाडा, संघोल, टेर माजरा
  रोपड़ (रूपनगर) - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- ***कश्मीर*** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- ***राजस्थान*** - कालीबंगा, बालाथल
  तरखान वाला डेरा
- ***उत्तर प्रदेश***- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गांव
  - हलास
  - सनौली
- ***गुजरात***
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, लोथल, रोजदि ख्वी तेलोद,नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर ,मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार
- ***महाराष्ट्र***- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार
  क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलो मीटर

इस सभ्यता की महत्वपूर्ण बातें -

- स्वतन्त्रता के बाद सर्वाधिक स्थल गुजरात में खोजे गये हैं।
- अल्लाहदीनो एवं मोहनजोदड़ो से सोने की वस्तुएं भारी संख्या में मिली हैं।

जुते हुए खेत के साक्ष्य कालीबंगा

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

• मौर्य काल

राजनीतिक इतिहास

- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से। (मगध में) की ।
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया ।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)
- साम्राज्य 52 लाख वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ था।
- **आचार्य चाणक्य**
- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे ।
- पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)

- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने अर्थशास्त्र नामक पुस्तक की रचना की।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं।

चन्द्रगुप्त मौर्य

- चन्द्रगुप्त मौर्य 322 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्युकस की पुत्री हेलन का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- उपाधियां - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

मेगस्थनीज

- मेगस्थनीज सेल्युकस 'निकेटर' का राजदूत था।
- चन्द्रगुप्त के शासन काल में पाटलिपुत्र में कई वर्षों तक रुका।
- इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।
- मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था।
- जस्टिन-चन्द्रगुप्त की सेना को डाकुओं का गिरोह कहता है।

यूनानियों ने चन्द्रगुप्त को

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718

अध्याय – 2

मध्यकालीन भारत

मुग़ल साम्राज्य (1526-1707)

- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया।
- लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की- दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलट कर दिया।
- बाबर ने मुग़ल साम्राज्य और मुग़ल सल्तनत की नींव रखी।
- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था, अधिकतर मुगल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे मुगल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।
- बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज़्बेकिस्तान का हिस्सा है।
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था।
- पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ. जिसमें बाबर की जीत हुई.
- खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई.
- चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई में मेदनी राय और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई.

- घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई में अफगानो और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई.

नोट -पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुलुगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया था। उस्ताद अली एवं मुस्तफा बाबर के दो प्रसिद्ध निशानेबाज थे। जिसने पानीपत के प्रथम युद्ध में भाग लिया था।

- पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर का भारत पर उसके द्वारा किया गया पांचवा आक्रमण था, जिसमें उसने इब्राहिम लोदी को हराकर विजय प्राप्त की थी और मुग़ल साम्राज्य की स्थापना की थी।

- बाबर की विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था। भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।

- पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिये' उस्मानी विधि जिसे 'रूमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।

- पानीपत के युद्ध में विजय की खुशी में बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को एक चाँदी का सिक्का दान में दिया था। अपनी इसी उदारता के कारण बाबर को 'कलन्दर' भी कहा जाता था।

- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात उनके शासकों को सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर अपने आपको 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।

- पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था।

- खानवा विजय प्राप्त करने के पश्चात बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण की थी। इस युद्ध के लिये अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था।

- खानवा के युद्ध में मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी, यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था।

- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया थायह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- बाबर ने 06 मई, 1529 में घाघरा का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुजुके बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चागताई तुर्की में लिखा है।
- बाबरनामा में बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है। जिसका फारसी अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबरिज द्वारा किया गया है।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है। साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेवाड़ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।
- बाबर ने 'रिसाल ए-उसज' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए बाबरी ' भी कहा जाता है।
- बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था।
- बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे 'नर-ए-अफगान' कहा जाता था, जिसे वर्तमान में 'आरामबाग-' के नाम से जाना जाता है।
- बाबर को मुबइयान नामक पद्य शेली का जन्म दाता जाता है ।
- बाबर को उदारता के कारण कलन्दर की उपाधि दी गयी थी ।

बाबर प्रसिद्ध नक्शबंदी

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718

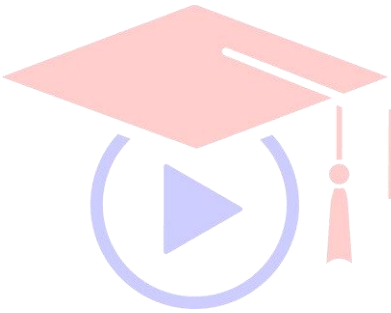

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 3

आधुनिक भारत

- **गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय**

गवर्नर जनरल:

ब्रिटिश भारत में 1773ई .से 1857ई .के बीच तेरह गवर्नर जनरल आए। इनके शासनकाल में निम्नांकित मुख्य घटनाएं एवं विकास हुए-:

वारेन हेस्टिंग (1772- 1785)

- दोहरी शासन प्रणाली]Dual Government System)की समाप्ति)जो बंगाल के गवर्नर)राबर्ट क्लाइव द्वारा शुरू किया गया था(।
- प्रथम गवर्नर जनरल बंगाल का वारेन हेस्टिंग्स था ।
- 1773 ई. रेग्यूलैटिंग एक्ट ।
- 1774 ई. में रोहिल्ला युद्ध एवं अवध के नवाब द्वारा रूहेलखण्ड पर अधिकार।
- 1781 ई. का एक्ट(इसके द्वारा गवर्नर जनरल परिषद एवं कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट न्यायिक अधिकार क्षेत्र का निर्धारण किया गया।
- 1782 में सालबाई की संधि एवं(1775-82) में प्रथम मराठा युद्ध।
- 1784 ई. का पिट्स इंडिया एक्ट।
- द्वितीय मैसूर युद्ध (1780-84)
- सुरक्षा प्रकोष्ठ या घेरे की नीतिका संबंध (वारेन हेस्टिंग्स एवं वेलेजली)
- 1785 ई. इंग्लैंड वापसी के बाद हाउस ऑफ लॉर्डस में महाभियोग का मुकदमा चलाया गया।
- 1784 ई. में सर विलियम जोंस एवं हेस्टिंग्स द्वारा एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाली स्थापना करना।
- गीता के अंग्रेजी अनुवादकार विलियम विलकिन्स चार्ल्स को वारेन हेस्टिंग_ने आश्रय प्रदान किया था ।

- वारेन हेस्टिंग के समय 1780 ई. में भारत का पहला समाचार पत्र द बंगाल गजट का प्रकासन जेम्स आगस्टस हिक्की ने किया था।
- वारेन हेस्टिंग के काल में बोर्ड ऑफ़ रेवेन्यु की स्थापना हुई।
- वारेन हेस्टिंग ने सम्पूर्ण लगान के हिसाब की देखभाल के लिए एक भारतीय अधिकारी राय रायन की नियुक्ति की इस पद को प्राप्त करने वाला पहला भारतीय दुर्लभराय का पुत्र राजा राजवल्लभ था।

लॉर्ड कार्नवालिस -: 1786 -1793 (1805)

- 1790 -92 ई .में तृतीय मैसूर युद्ध हुआ।
- 1792 ई .में श्रीरंगपटनम की सधि।
- 1793 ई .में बंगाल एवं बिहार में स्थायी कर व्यवस्था जमींदारी प्रथा की शुरुआत।
- 1793ई .मे न्यायिक सुधार,
- विभिन्न स्तरों के कोर्ट की स्थापना
- कर प्रशासन को न्यायिक प्रशासन से अलग करना।
- सिविल सर्विस की शुरुआत।
- प्रशासन तथा शुद्धिकरण के लिए सुधार।
- स्थायी बंदोबस्त प्रणाली को इस्तमरारी,जमींदारी, माल गुजारी एवं बीसवेदारी आदि नाम से भी जाना जाता हैं।
- कॉर्नवालिस को भारत में नागरिक सेवा का जनक माना जाता हैं।

सर जॉन शोर (1793-98):-

- स्थायी बंदोबस्त)1993) को शुरू करने में इन्होने 'राजस्व बोर्ड अध्यक्ष के रुप में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

लॉर्ड वेलेजली (1798-1805):-

- लॉर्ड वेलेजली 1798 से 1805 तक बंगाल का गवर्नर जनरल रहा। उसके कार्यकाल में अंतिम मैसूर युद्ध लड़ा गया।
- इस युद्ध के बाद मैसूर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन आ गया।

- लॉर्ड वेलेजली के काल में द्वितीय मराठा युद्ध लड़ा गया था जिसमें अंग्रेजों की विजय हुई। यह कंपनी राज के सबसे महत्वपूर्ण युद्धों में से एक था।
- उसने सहायक संधि की शुरुआत की।
- लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि को सर्वप्रथम मैसूर के राजा (1799), तंजौर के राजा (1799), अवध के नवाब (1801), पेशवा (1801), बरार के राजा (1803), सिंधिया (1804), जोधपुर, जयपुर, बूंदी और भरतपुर के राजा थे।
- उसने 10 जुलाई 1800 को फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।
- उसने 1799 में सेंसरशिप एक्ट पारित किए जिसका उद्देश्य फ्रांस की मीडिया पर नियंत्रण करना था।

Note:

- सहायक संधि को स्वीकार करने वाला पहला शासकअवध का नवाब (1765)
- वेलेजली डी सहायक संधि को स्वीकार करने वाला प्रथम शासक
- हैदराबाद निजाम (1798)

लार्ड मिंटो प्रथम (1807-13):-

- मिंटो के पहले सर जार्ज बार्लो वर्ष) 1805-07) के लिए गवर्नर जनरल बना।
- वेल्लोर विद्रोह) 1806)।
- रंजीतसिंह के साथ अमृतसर की संधि) 1809(।
- 1813 ई .का चार्टर एक्ट।

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823)

- लॉर्ड हेस्टिंग्स 1813 से 1823 तक भारत के गवर्नर जनरल रहा। उसके काल में दो महत्वपूर्ण युद्ध गुरखा युद्ध और तृतीय एंग्लो-मराठा युद्ध लड़े गए।
- गुरखा युद्ध 1814 से 1816 तक लड़ा गया जिसमें ईस्ट इंडिया कंपनी की जीत और गोरखों की हार हुई।
- इस युद्ध के बाद मराठा साम्राज्य का अंत हो गया।
- राजपूताना के राजाओं ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।

- उसने सेंसरशिप एक्ट को हटा लिया और स्वतंत्र प्रेस को समर्थन दिया।
- उसके काल में समाचार दर्पण नमक समाचार पत्र 1818 में शुरू हुआ।
- 1823 में लॉर्ड हेस्टिंग्स रिटायर हो गया।
- इसी के समय 1822 ई. में टेनेन्सी एक्ट या कास्तकारी अधिनियम लागू किया गया।
- 1816 ई. में अंग्रेजों एवं गोरखों के बीच संगोली की संधि के द्वारा आंग्ल नेपाल युद्ध का अंत हुआ।

लार्ड एमहर्स्ट (1823-28):-

- प्रथम बर्मा युद्ध (1824-26)।
- भरतपुर पर कब्जा (1826)।

लॉर्ड विलियम बैंटिक (1828 -1835)

- लॉर्ड विलियम बैंटिक 1828 से 1835 तक भारत का गवर्नर जनरल रहा। उसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य सती प्रथा का अंत था।
- उसके काल में एंग्लो-बर्मा युद्ध के कारण ईस्ट इंडिया कंपनी की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, उसने कंपनी की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कार्य किए।
- उसने कंपनी का खर्च 1.5 लाख स्टर्लिंग वार्षिक तक घटा दिया, मालवा में अफीम पर कर लगाया और कर व्यवस्था को मजबूत किया।
- सतीप्रथा पर पहली रोक 1515 में पुर्तगालियों ने गोवा में लगाई, हालांकि इसका कोई फर्क नहीं पड़ा।
- इसके बाद 1798 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने कुछ हिस्सों में सती प्रथा पर रोक लगाई।
- राजा राममोहन राय ने 1812 से सती प्रथा के विरोध में आंदोलन शुरू किया, जिसके कारण 1829 में सती प्रथा पर रोक लगाई गई।
- राजपूताना में यह रोक बाद में लगी, जयपुर स्टेट ने 1846 में सती प्रथा पर रोक लगाई।
- उसने ठगों पर रोक लगाई। ठग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के स्थग से हुई है जिसका अर्थ होता है धूर्त।
- ठगी पर रोक लगाने वाला योग्य अधिकारी विलियम हेनरी स्लीमैन था। स्लेमैन ने 1400 से अधिक ठगों को पकड़ा था। ठग देवी काली की पूजा करते थे।

- उसने बंगाल प्रेसीडेंसी को 20 भागों में बांटा और प्रत्येक भाग में एक कमिश्नर नियुक्त किया।
- इलाहाबाद (प्रयागराज) में दीवानी और सदर निजामी अदालत शुरू की।
- मुंसिफ़ो और सदर अमीनों की नियुक्ति की गयी।
- इसी के समय में मैकाले की अनुसंसा पर अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया मैकाले द्वारा कानून का वर्गीकरण भी किया गया।

इसने शिशु बालिका की हत्या पर भी प्रतिबंध लगा

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718

- **1857 की क्रांति से पूर्व के जन आन्दोलन**

राजनीतिक – धार्मिक आंदोलन

फकीर विद्रोह (1776–77)

- यह विद्रोह बंगाल में विचरणशील मुसलमान धार्मिक फकीरों द्वारा किया गया था।
- इस विद्रोह के नेता मजनू शाह ने अंगेजी सत्ता को चुनोती देते हुए जमीदारों और किसानों से धन इक्कठा करना आरम्भ कर दिया।
- मजनू शाह की मृत्यु के बाद चिराग अली शाह ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया।

सन्यासी विद्रोह (1770 – 1820)

- संन्यासी विद्रोह भारत की आज़ादी के लिए बंगाल में अंग्रेज़ हुकूमत के विरुद्ध किया गया एक प्रबल विद्रोह था।
- संन्यासियों में अधिकांश शंकराचार्य के अनुयायी थे।
- इतिहास प्रसिद्ध इस विद्रोह की स्पष्ट जानकारी बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास 'आनन्दमठ' में मिलती है।

पागलपंथी विद्रोह (1813 - 33)

- उत्तर पूर्वी भारत में प्रभावी पागलपंथी एक धार्मिक पंथ था।
- उत्तर पर्वी क्षेत्र में हिन्दू मुसलमान और गारो तथा जांग आदिवासी इस पंथ के समर्थक थे।
- इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा क्रियान्वित भू-राजस्व तथा प्रसासनिक व्यवस्था के कारण व्यापक असंतोष था।
- इस विद्रोह को 1833 ई. में दबा दिया गया।

वहाबी आंदोलन (1820 – 70)

- वहाबी आंदोलन मूलतः एक इस्लामिक सुधारवादी आंदोलन था। जिसने कालांतर में मुस्लिम समाज में व्याप्त अन्धविश्वास एवं कुरीतियों के उन्मूलन को अपना उद्देश्य बनाया।
- इस आन्दोलन के संस्थापक अब्दुल वहाब के नाम पर इसका नाम वहाबी आंदोलन पड़ा।
- सैयद अहमद बरेलवी ने भारत में इस आंदोलन को प्रेरणा प्रदान की।

कूका विद्रोह

- कूका विद्रोह की शुरुआत पंजाब में 1860-1870 ई. में हुई थी।
- पश्चिमी पंजाब में 'कूका विद्रोह' की शुरुआत लगभग 1840 ई. में 'भगत जवाहर मल' द्वारा की गयी थी।
- भगत जवाहर मल को 'सियान साहब' के नाम से भी जाना जाता था।

1872 ई. में इसके एक नेता 'रामसिंह' को रंगून निर्वासित कर दिया और

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों, यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718

इतिहास और संस्कृति (राजस्थान के सन्दर्भ में)

इतिहास –

अध्याय – 2

प्राचीन सभ्यताएं

अब हम राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं पढ़ते हैं।

I. कालीबंगा की सभ्यता -

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है। इसलिए कालीबंगा की सभ्यता एक नदी किनारे बसी हुई थी नदी का नाम है – सरस्वती नदी। इसे , द्वेषनदी, मृतनदी, नटनदी के नाम से भी जानते हैं।

यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे पीलीबंगा की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज -

इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री लुईतैसीतौरी थे। इन्होंने ही यह सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप सेध्या न नहीं था इसलिए इसकी खोजन हीं हो पाई।

इस सभ्यता के खोजकर्ता अमलानंद घोष हैं। उन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।

इनके बाद में यह सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1.बृजवासीलाल
2.बीके (बालकृष्ण) थापर इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

<u>लुईसपी. तैसीतॉरी के बारे में -</u>

ये इटली के पुद्दीने कस्बे के निवासी थे इनका जन्म सन 1887 में हुआ। और यह 1900 ईस्वी में भारत आए ।यह बीकानेर राज्य में सबसे पहले आए । उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिह जीने इन्हें अपने राज्य का सभी प्रकार का चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी ।बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

इस सभ्यता का काल क्रम कार्बन डेटिंग पद्धति के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।

कालीबंगा शब्द "सिधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - "काले रंग की चूड़िया"। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों की बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।

कालीबंगा की सभ्यता है एक भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो स्वतंत्रता के बाद खोजी गई थी। यह एक कांस्य युगीन सभ्यता है।

हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा 1985 - 86 में कालीबंगा संग्रहालय की स्थापना की गई थी ।यह संग्रहालय हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।

<u>यह सभ्यता की विशेषताएं -</u>

इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं इसलिए यहां पर मकान बनाने की पद्धति को "ऑक्सफोर्ड पद्धति" कहते हैं। इसी पद्धति को जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति के नाम से भी जानते हैं।

मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भयें कच्ची ईटे थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं इन ईटों का आकार 30 * 15 * 7.5 हैं।

इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे

यहां पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईटों से होता था (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियां मिली है वह कालीबंगा स्थल है)

विश्व की प्राचीनतम जुते हुए खेत के प्रमाण इसी सभ्यता से मिलते हैं।

यहां पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंपके प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।

यहां के लोग एक साथ में दो फसलें करते थे अर्थात फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं सेमिलते हैं जौ और गेहूं।

यहां पर उत्खनन के दौरान यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं प्राप्त हुए हैं यहां के लोग बलिप्रथा में भी विश्वास रखते थे।

इस सभ्यता का पर यह जानवर कुत्ता था। यह सभ्यता के लोग ऊंट से भी परिचित थे इसके अलावा गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से भी परिचित थे।
विश्व में प्राचीनतम नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे नगरीय सभ्यता भी कहते हैं यहां पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।

यहां पर समाधि प्रथा का प्रचलन था। यह समाधि तीन प्रकार की मिलती है अर्थात तीन प्रकार सेमृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था

- अंडाकार गड्ढा खोद कर व्यक्ति को दफनाना। इस गड्ढे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को तोड़मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना

- एक खड्डा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना

स्वास्तिक चिन्ह का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्ति क चिन्ह का प्रयोग यहां के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए किया जाता था।

कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की समानता के प्रमाण बेलनाकार बर्तन मिलते हैं।

यहां पर एक कपाल मिलता है जिस में छह प्रकार के छेद थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहां के लोग शल्य चिकित्सा से परिचित थे अर्थात शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिलते हैं।
यहां पर एक सिक्का प्राप्त होता है जिस के एक ओर स्त्री का चित्र हैंत था दूसरी ओर चीता का चित्र बना हुआ है अर्थात अनुमान लगाया जा सकता है कि यहां पर परिवार की मातृसत्तात्मक प्रणाली का प्रचलन था।
कालीबंगा सभ्यता को सिंधुसभ्यता की तीसरी राजधानी कहा जाता है।
कालीबंगा में सभ्यता में इस सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।
इस सभ्यता के लोग मध्य एशिया सेव्या पार करते थे, इसका प्रमाण सामूहिक तंदूर सेमिलता है क्योंकि तंदूर मध्य एशिया से सम्बंधित है।
इस सभ्यता के भवनों का फर्ज सजावट एवं अलंकृत के रूप में मिलता है।

<u>आहड़सभ्यता</u>

इस सभ्यता का विकास राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित आहड़ नामक स्थान पर हुआ अर्थात इस सभ्यता का सर्वप्रथम प्रमाण आहड़ नामक स्थान पर हुए उत्खनन से प्राप्त हुए थे।

यह सभ्यता आयड़ नदी के किनारे विकसित हुई आयड़ नदी उदयपुर की उदयसागर झील से इस नाम से जानी जाती है। चित्तौड़गढ़ नगर बेडच नदी के किनारे बसा है जबकि चित्तौड़गढ़ दुर्ग बेडच नदी और गंभीरी नदी के किनारे बसा है। बेडच नदी बनास नदी की सहायक नदी है इसलिए कहा जाता है कि यह नदी यह सभ्यता बनास नदी के किनारे विकसित हुई।
इस सभ्यता से मिले हुए प्रमाणो के आधार पर इसे दो कालों में बांटा गया है -
1.ताम्रकालीन सभ्यता 2. लोहयुगीन सभ्यता
यहां पर तांबे के और लोहे के अवशेष मिले हैं।

इस सभ्यता के प्राचीन नाम -

1. ताम्रवती नगरी – इस सभ्यता के लोगों का प्रमुख उद्योग तांबे से संबंधित था इसलिए इसे ताम्रवती नगरी के नाम से भी जानते हैं
2. आघाटपुर - क्योंकि यहां पर एक दुर्ग मिला है जिसे अघाट दुर्ग के नाम से जानते हैं।
3. आघाट दुर्ग

उपनाम -

पुणे विश्व विद्यालय के पूर्व प्रोफेसर धीरज लाल सांकलिया ने इसे आहड़ सभ्यता का नाम दिया। इसे बनास संस्कृति के नाम से भी जानते हैं। इस सभ्यता का उत्खनन धीरज लाल संकलिया के द्वारा भी किया गया था।

धीरज लाल सांकलिया को खुदाई के दौरान यहां से एक 40 फीट का गहरा गड्ढा मिला था जो इस बात का प्रमाण है कि

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718

अध्याय – 4

मेवाड़ का इतिहास

मेवाड़ के पुरातात्विक स्त्रोत

नगरी का लेख (200 बी-सी-150 बी-सी)

यह चित्तौड़गढ़ जिले के प्राचीनत नगर माध्यमिक या नगरी से प्राप्त शिलालेख है, जो जैन या बोद्धों से संबंधित है। यह बहुत छोटा शिलालेख है।

नाथ-प्रशस्ति-एकलिग जी (971 ई.)

यह उदयपुर के पास स्थित कैलाशपुरी एकलिग जी के लकुलीश मंदिर में नरवाहनं के समय का संस्कृत भाषा व देवनागरी लिपि का अभिलेख है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

जैन कीर्ति स्तम्भ लेख (13 वीं सदी)

चित्तौड़ दुर्ग में स्थित रणकपुर के चौमुखा मंदिर (आदिनाथ मंदिर) में सस्कृत भाषा व नागरी लिपि में उत्कीर्ण। इसमें कुम्भा के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

विजय, स्तम्भ प्रशस्ति (1460 ई.)

चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित विजय स्तम्भ पर उत्कीर्ण। इसका प्रशस्तिकार कवि अत्रि व उसका पुत्रा महेश भट्ट था। इसमे बाण, हम्मीर मोकल का उल्लेख मिलता है। गणेश, शिव स्तुति मिलती है।

इसमें कुम्भा द्वारा रचित ग्रन्थों, विरुदों ;दानगुरू, राजगुरू,शैलगुरूद्ध का उल्लेख तथा मालवा व गुजरात की सम्मिलित सेना को हराने का उल्लेख मिलता है।

कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.) :-

यह लेख राजसमंद जिले के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भस्याम मंदिर (मामादेव का मंदिर -वर्तमान नाम) में संस्कृत भाषा एवं नागरी लिपि में पांच शिलाओं पर उत्कीर्ण है। । इसमें भौगोलिक स्थिति का, जनजीवन का, एकलिग मंदिर का वर्णन, चित्तौड़ का वर्णन- (चित्रांग ताल, दुर्ग, वैष्णव तीर्थ के रूप में) किया गया है।

इसमें मुख्यतया कुम्भा के विजयों का विस्तार से वर्णन मिलता है।

इसका रचयिता कान्ह व्यास है। जबकि डॉ। गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार इसका रचयिता महेश भट्ट है।

<u>जगन्नाथराय प्रशस्ति (1676) :-</u>

यह जगदीश मंदिर, उदयपुर में उत्कीर्ण है।

इसमें बाप्पा से सांगा तक की उपलब्धियं का वर्णन है।

यह मंदिर जगतसिह प्रथम द्वारा बनाया गया।

यह पंचायतन शैली का लेख है। जिसे अर्जुन की निगरानी में तथा सूत्राकार भाणा व उसके पुत्रा मुकन्द की अध्यक्षता में बनवाया गया।

<u>राजप्रशस्ति (1676) :-</u>

यह प्रशस्ति राजसंमद झील के तट पर नौ चौकी स्थान के ताकों में 27 काली पाषाण शिलाओं पर पद्य संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है।

इसका रचयिता तेलंग ब्राह्मण रणछोड़ भट्ट था।

इस प्रशस्ति के उत्कीर्ण कर्ता गजध्र मुकुन्दर, अर्जुन, सुखदेव, केशव, सुन्दरलालों, लखों आदि थें।

मेवाड़ के शासकों की उपलब्धियो का वर्णन मिलता है।

यह प्रशस्ति जगतसिह प्रथम तथा राजसिह के काल की उपलब्धियँ जानने के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत है, यह विश्व की सबसे बड़ी पाषाण उत्कीर्ण प्रशस्ति है।

- मेवाड़ का गुहिल वंश - मेवाड़ रियासत राजस्थान की सबसे प्राचीन रियासत है, इसे मेदपाट, प्राग्वाट, शिवि जनपद आदि उपनामों से जाना जाता है।
- मेवाड़ का गुहिल वंशी राजघराना एकलिगजी (शिव) का उपासक था, इसी कारण मेवाड़ के शासक एकलिगनाथजी को स्वयं के राजा/ईष्ट देव तथा स्वयं को एकलिगनाथजी का दीवान मानते हैं।
- गुहिल वंश की कुल देवी बाण माता है। मेवाड़ रियासत के सामंत 'उमराव कहलाते थे। मेवाड़ के महाराणा राजधानी छोड़ने से पहले एकलिगजी से आज्ञा लेते थे, उसे 'आसकाँ कहते थे।
- मेवाड़ के महाराणा 'हिन्दुआ का सूरज कहलाते हैं क्योंकि वो स्वयं को सूर्यवंशी मानते हैं। गुहिल वंश के राजध्वज पर 'उगता सूरज एवं धनुष बाण अंकित है तथा इसमें उदयपुर का राजवाक्य "जो दृढ़ राखै धर्म को, तिहीं राखै करतार है" अंकित है।

ये शब्द उनके स्वतंत्रता, प्रियता एवं धर्म पर दृढ रहने के सकते देते है। मेवाड़

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718

अध्याय – 5

मारवाड़ का इतिहास

- **राठौड़ वंश**

राजस्थान के उत्तरी पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है। उसे मारवाड के नाम से जाना जाता है। मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था। प्रतिहार यहां से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये। फिर राठौड़ वंश कि स्थापना इस भाग में हुई तथा मारवाड़ कि संकटकालीन राजधानी ' शिवाना दुर्ग ' को कहा जाता था।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
3- किशनगढ़	1609 ई.-	किशनसिह

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

उत्पत्ति

राठौड़ शब्द की व्युत्पत्ति श्राष्ट्रकूटश् शब्द से मानी जाती है।

पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं। ।

'राष्ट्रोढ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है।

डा. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है। इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया हैं।

डा. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना हैं।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

मारवाड़ के राठौड़ वंश के संस्थापक, तथा मारवाड के राठौड़ों का संस्थापक या आदि पुरुष भी कहा जाता है।

राव सीहां कुंवर 'सेतराम' का पुत्र था उसकी रानी सोलंकी वंश की 'पार्वति थी।

13 वीं शताब्दी में जब तुर्कों ने कन्नौज को आक्रमण कर बरबाद कर दिया तो राव सी हा मारवाड़ चला आया।

राव सीहा ने सर्वप्रथम पाली (वर्तमान) के निकट अपना साम्राज्य स्थापित किया ऐसा कहते हैं कि उन्होंने पाली के पालीवाल ब्राह्मणों को मेर व मीणाओं के अत्याचार से मुक्ति दिलाई उनकी रक्षा की तथा उसके पश्चात् उनके आग्रह पर वहीं आकर बस गया।

पाली के समीप बीठू गाँव के देवल के लेख से सीहा की मृत्यु की तिथि 1273 ई. निश्चित होती है ।इस लेख के अनुसार सीहा सेतकुँवर का पुत्र था। उसकी पत्नी पार्वती ने उसकी मृत्यु पर इस देवल का निर्माण करवाया था ।इस लेख के अनुसार सीहा की मृत्यु बीठू गांव (पाली) में मुसलमानों से गायों कि रक्षा करते हुए युद्ध के दौरान हुई थी। इस लेख पर अश्वारोही सीहा को शत्रु पर भाला मारते हुए दिखाया गया है। इस लेख से प्रमाणित होता है कि इस समय राठौड़ों का राज्य विस्तार पाली के आसपास ही सीमित था।

राव सिहा के पश्चात् उनका पुत्र आसथान गद्दी पर बैठा।

आस्थान (1273 – 1291)

सीहा के बाद आसथान राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोज को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसथान वीरगति को प्राप्त हुआ

आसथान के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी ; नागणेची द्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।

इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोकदेवता पाबू जी के पिता थे।

राव चुंडा (1383 – 1423)

राव चूडा विरमदेव का पुत्र था ।

'राव चूँडा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता हैं। अपने पिता की मृत्यु के समय चूँडा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँडा को सालोड़ी गाँव जागीर में दिया था ।

उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डोर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज मे उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।

चूँडा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।

इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूँडा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।

उसने जलाल खां खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।

परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगलप्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँडा मारा गया ।

राव चूँडा ने नागौर के पास चूण्डासर कस्बा बसाया ।

उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँदबावड़ी का निर्माण

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718

- **पृथ्वीराज राठौड़**

- पृथ्वीराज राठौड ।570 ई. के नागौर दरबार में अकबर की सेवा में आया पृथ्वीराज राठौड़ अकबर के दरबारी कवियों में से एक था पृथ्वीराज राठौड़ उच्च कोटि का कवि एवं बिष्णु भक्त था
- अकबर ने पृथ्वीराज राठौड़ को गागरोण दुर्ग भेंट किया था।
- पृथ्वीराज राठौड़ ने गागरोण दुर्ग में वेलि किसन रुकमणी री वचनिका की रचना की।
- पृथ्वीराज राठौड के अन्य ग्रंथ - दशम भागवत रा दूहा , दशरथ , राउत व गंगा लहरी है।
- ' वेलि किसन रुकमणी री वचनिका ' नामक ग्रंथ से हमें श्री कृष्ण एवं रुकमणी के विवाह की कथा का वर्णन मिलता है।
- 'वेलि किसन रुकमणी री ' डिगल भाषा उत्तर-पश्चिमी मारवाडी में लिखी गई।
- जोधपुर के कवि दुरसाआढा ने 'वेलि किसन रुकमणी री' को 5वाँ वेद तथा ।9वाँ पुराण कहा है।
- वेलि किसन रुकमणी री को प्रकाश में लाने का श्रेय टैस्सीटोरी को है।
- टैस्सीटोरी उदीने गाँव, इटली का मूल निवासी था टैस्सीटोरी ने पृथ्वीराज राठौड को ' डिगल का हेरास ' कहा है।
- टैस्सीटोरी ने बीकानेर में रहकर चारण साहित्य पर शोध किया टैस्सीटोरी की कर्मस्थली व छत्तरी बीकानेर में है।
- पृथ्वीराज राठौड 'पीथल' नाम से साहित्य की रचना करते थे पृथ्वीराज राठौड़ का जन्म महाराणा प्रताप के जन्म के 9 साल बाद में हुआ, जबकि निधन दो साल बाद में हुआ था ।
- पृथ्वीराज राठौड़ ने अपनी मृत्यु का समय व स्थान अकबर को 6 माह पूर्व ही बता दिया था, इस प्रकार पृथ्वीराज की मृत्यु आगरा में ही निर्धारित समय पर हुई।

महाराजा रायसिह (1674-1612)

- रायसिह कल्याणमल राठौड़ (बीकानेर) का बडा पुत्र था। जिनका जन्म 20 जुलाई ।54। ई. को हुआ।
- मुंशी देवी प्रसाद ने रायसिह को 'राजपूताने का कर्ण' कहा है।
- रयसिह को 'मुगल दरबार का स्तंभ ' भी कहा जाता था।

- 1550 ई. के नागौर दरबार में रायसिंह अकबर की सेवा में आया।
- ट्टी पर बैठने के पश्चात रायसिंह ने महाराजाधिराज व महाराज की उपाधि धारण की। इससे पहले यहाँ के शासक रावकहलाते थे।
- बीकनेर के राठौड़ नरेशों में प्रथम राजा जिसने इन उपाधियों को धारण किया।
- हाराजा रायसिंह के मुगलों से संबंध
- रायसिंह ने मुगलों की जीवन पर्यन्त सेवाकी थी। (पटवार-2011)

note - अकबर का दूसरा विश्वासपात्र राजा रायसिंह था। अकबर ने इसे 4000 की मसबदारी प्रदान की थी अकबर का पहला विश्वासपात्र राजा मिर्जा राजा मानसिंह प्रथम था अकबर ने इसे 7000 की मनसबदारी प्रदान की थी।

- रायसिंह जब जोधपुर की व्यवस्था संभाल रहा था, तभी इब्राहिम मिर्जा ने नागौर में विद्रोह कर दिया। रायसिंह ने कठौली नामक गाँव में उसका दमन किया।
- अकबर ने 1572 ई. में रायसिंह को जोधपुर का प्रशासक नियुक्त किया।
- रायसिंह ने 1573 ई. में मालवा के मिर्जाबंधुओं (इब्राहिम मिर्जा व मोहम्मद मिर्जा) के विद्रोह का दमन किया था।
- रायसिंह ने सम्राट अकबर को मिर्जा बन्धुओं के संकट से मुक्त करवा दिया। गुजरात के इस अभियान में रायसिंह की वीरता से अकबर बहुत प्रसन्न हुआ। इस सैनिक अभियान के उपरांत रायसिंह सम्राट का विश्वासपात्र दरबारी बन गया और संतुष्ट अकबर ने राठौड़ों से अपने सम्बन्ध और भी सुदृढ करने की दृष्टि से रायसिंह की पुत्री का विवाह अपने पुत्र सलीम के साथ कर दिया।
- 1574 ई. में अकबर ने चंद्रसेन के विरुद्ध रायसिंह को भेजा था।
- 1574 ई. में रायसिंह 'महाराजाधिराज' उपाधि के साथ बीकानेर का शासक बना।
- रायसिंह की पुत्री का विवाह शहजादे सलीम से हुआ। अभागा शाहजादा परवेज इसी विवाह का फल था।
- रायसिंह ने दो मुगल शासकों अकबर व जहाँगीर की सेवा की।
- जहाँगीर का सबसे विश्वासपात्र राजपूत राजा रायसिंह था।
- जहाँगीर ने रायसिंह को 5000 मनसबदारी प्रदान की थी।

दत्ताणी का युद्ध-

यह युद्ध 1583 ई. में पुगल सेना तथा सिरोही के शासक देवड़ा सुल्तान के मध्य हुआ, जिसमें मुगल प्रतिनिधि जगमाल मारा गया तथा देवडा सुल्तान की विजय हुई। सिरोही के समस्त क्षेत्र पर देबड़ा सुल्तान ने अधिकार कर लिया।

- जे बी. मैलिसन ने अपनी पुस्तक नेटिव स्टेट्स ऑफ इंडिया में सिरोही को राजस्थान का ऐसा प्रदेश बताया है जो कभी किसी के अधीन नहीं रहा।

1589-94 ई. के बीच रायसिंह ने अपने प्रधानमंत्री कर्मचंद की देखरेख में जूनागढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया तथा जूनागढ़ दुर्ग में रायसिंह प्रशस्ति भी

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718

अध्याय – 13

राजस्थान का एकीकरण

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा की थी कि 3 जून 1948 तक भारत की सत्ता भारतीयों को सौंप दी जाएगी।
- इन्होंने नया गर्वनर जनरल लार्ड माउन्ट बेटन को नियुक्त किया (भारत का अंतिम गवर्नर जनरल)
- 31 दिसम्बर 1945 को उदयपुर राज्य में पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के अधिवेशन में राजस्थान के एकीकरण का सुझाव दिया गया। राजाओं के वैमनस्य को देखते हुए यह लगने लगा था कि ये लोग स्वयं कोई निर्णय नहीं ले पायेंगे। इसलिए से अनुभव किया जाने लगा कि अब केन्द्र सरकार को ही एकीकरण का प्रयास करना होगा।
- अतः सरदार वल्लभ भाई पटेल ने 16 दिसम्बर 1948 को यह घोषणा की कि राजस्थान की सभी छोटी-बड़ी रियासतों को मिलाकर एक संघ का निर्माण किया जाएगा।
- केबिनेट मिशन के अनुसार ब्रिटिश सरकार ने 22 मई 1946 ई. को घोषणा की कि छोटी-छोटी रियासतो को आपस में मिलाकर बड़ी इकाईयां बना लेनी चाहिए या पड़ौस की बड़ी रियासतों या प्रांतों में मिल जाना चाहिए।
- भारत स्वतंत्रता अधिनियम - 1947 की आठवीं धारा के अनुसार देशी रियासतों पर से ब्रिटिश प्रभुसत्ता का अंत हो गया।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में तीन श्रेणी के राज्य थे –

(1) ए श्रेणी - वे राज्य, जो पूर्व में प्रत्यक्ष ब्रिटिश नियंत्रण में थे जैसे बिहार, बम्बई, मद्रास आदि। इनके प्रमुख राज्यपाल (गवर्नर) कहलाते थे।

(2) बी श्रेणी - वे राज्य, जो स्वतंत्रता के बाद छोटी-बड़ी रियासतों के एकीकरण द्वारा बनाये गए थे, जैसे राजस्थान, मध्य भारत आदि। इनके प्रमुख राजप्रमुख कहलाते थे।

(3) सी श्रेणी - ये वे छोटे-छोटे राज्य थे, जिन्हें ब्रिटिश काल में चीफ कमिशनर के प्रान्त कहा जाता था जैसे अजमेर, दिल्ली।

- लार्ड माउन्टबेटन ने 3 जून 1947 को भारत विभाजन/डिकी बर्ड प्लान/बेंटन योजना प्रारंभ की
- इस अधिनियम की धारा 14 के अनुसार अब देशी रियासतें या तो भारत या पाकिस्तान में अपना विलय कर सकती थी या अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रख सकती थी।
- सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में एक रियासती विभाग का गठन किया गया जिसके सचिव वी.पी. मेनन बने, क्योंकि वी.पी. मेनन उस समय लार्ड माउंटबेटन के सलाहकार थे।
- रियासती विभाग की स्थापना 5 जुलाई 1947 को की गई।
- भारत सरकार ने यह तय किया कि केवल वे ही रियासतें अपना स्वतंत्र अस्तित्व रख सकती हैं जिनकी वार्षिक आमदनी एक करोड़ रुपये या जनसंख्या 10 लाख से अधिक है।
- इस मापदण्ड के अनुसार राजस्थान की केवल चार रियासतें जयपुर, जोधपुर, उदयपुर व बीकानेर ही अपना स्वतंत्र अस्तित्व रख सकती थी।
- जबकि चार अन्य रियासतें अलवर, भरतपुर, डूंगरपुर एवं जोधपुर अपने आपको स्वतंत्र रखना चाहती थी।
- संविधान के 7 वे संशोधन द्वारा 'ए', 'बी', 'सी' श्रेणी का भेदभाव समाप्त कर दिया गया तथा राजप्रमुख के स्थान पर राज्यपाल का पद सृजित हुआ। राजपूताना को बी श्रेणी का राज्य माना गया था।
- मेवाड़ के महाराणा भूपालसिह ने राजस्थान की सभी रियासतों को मिलाकर राजस्थान यूनियन का गठन करने हेतु 25-26 जून, 1946 को उदयपुर में राजपूताना, गुजरात एवं मालवा के नरेशो का सम्मेलन बुलाया। उनका राजस्थान यूनियन के गठन का प्रयास असफल रहा।
- इसी तरह के असफल प्रयास कोटा महाराव भीमसिह ने हाड़ौती संघ बनाकर करने का प्रयास किया।
- कोटा महाराव भीमसिह को आधुनिक इतिहास में राजस्थान एकीकरण का जनक कहा जाता हैं।

- डूंगरपुर के शासक महारावल लक्ष्मण सिह ने बागड़ संघ बनाने का प्रयास किया।
- राजस्थान की भौगोलिक स्थिति को सर्वप्रथम एक करने का प्रयास मुगल सम्राट अकबर द्वारा किया गया था।
- स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय राजस्थान में कुल ।9 रियासतें, 3 ठिकानें (चीपफशिप/खुदमुख्तियार), लावा (जयपुर रियासत में स्थित, वर्तमान में टोंक में), कुशलगढ़ (बांसवाड़ा), नीमराणा (अलवर) तथा। केन्द्र शासित प्रदेश अजमेर-मेरवाड़ा था।
- धौलपुर व भरतपुर रियासत जाट शासकों के अधीन थी व टोंक रियासत पर मुस्लिम नवाब शासन करते थे।
- राजस्थान की सबसे प्राचीन रियासत मेवाड़ थी जिसकी स्थापना गुहिल नामक व्यक्ति ने 566 ईस्वी में की तथा इसकी राजधानी नागदा थी। यही रियासत उदयपुर राज्य के नाम से प्रसिद्ध हुई।
- सबसे नयी -झालावाड़ रियासत (।४35 ई.) थी। यह राजपूताना की एकमात्र रियासत थी जिसकी स्थापना एक अंग्रेज लार्डआकलैंड द्वारा की गई थी।
- क्षेत्रफल एवं जनसंख्या दोनों के आधार पर सबसे छोटी रियासत शाहपुरा थी। राजा सुदर्शन देव उसके शासक थे।
- इन्होंने ही ।4 अगस्त, ।947 को राजस्थान में सर्वप्रथम उत्तरदायी शासन शाहपुरा में स्थापित किया था।
- क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ी रियासत मारवाड़ (जोधपुर) थी। महाराजा हनुवन्त सिह उसके शासक थे। इन्होंने जोधपुर का विलय पाकिस्तान में करने का असफल प्रयास किया था।
- ज़नसंख्या के आधार पर सबसे बड़ी रियासत जयपुर थी।
- राजस्थान का एकीकरण सात चरणों में पूरा हुआ। यह प्रक्रिया ।7 मार्च ।९४8 से आरम्भ होकर। नवम्बर ।९56 तक चली।
- 30 मार्च को राजस्थान दिवस के रूप में मनाया जाता हैं। क्योंकि इस दिन राजस्थान की बड़ी रियासतों को मिलाकर एकीकरण का कार्य लगभग पूर्ण कर लिया गया था।
- आधुनिक राजस्थान का वर्तमान स्वरूप। नवम्बर ।९56 को अस्तित्व में आया था। अतः । नवंबर को राजस्थान स्थापना दिवस मनाया जाता हैं।
- राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री पं. हीरालाल शास्त्री (23 मार्च, ।९49 को बने)थे।

- राजस्थान के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री पं. हीरालाल शास्त्री थे।
- राजस्थान के प्रथम दलित या अनुसूचित जाति का मुख्यमंत्री जगन्नाथ पहाड़िया थे।

राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री टीकाराम पालीवाल

नोट – प्रिय पाठकों, यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 17

धार्मिक आस्था , संप्रदाय , संत, कवि योद्धा संत

प्रदेश में सर्वाधिक हिन्दू पाये जाते हैं, जो वैष्णव धर्म में आस्था रखते हैं। यहां मुख्यरूप से वैष्णव, शैव व शाक्त मत के अनुयायी पाये जाते हैं। ये मत ही अनेक सम्प्रदायों में बंटे है। राजस्थान में मुख्य रूप से दो सम्प्रदायों के लोग पाये जाते हैं -

1. **सगुण सम्प्रदाय** - ये भगवान व मूर्तिपूजक होते हैं, जो आत्मा में विश्वास करते हैं। ये निम्नलिखित हैं - रामानुज सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, निबर्कि सम्प्रदाय, नाथ सम्प्रदाय, गौडीय सम्प्रदाय, पाशुपत सम्प्रदाय, चरणदासी सम्प्रदाय , मीरा दासी सम्प्रदाय।
2. **निर्गुण सम्प्रदाय** - ये निगुर्ण ब्रह्म की उपासना करते है, जो आत्मा व मूर्ति पूजा के विरोधी होते हैं। ये निम्नलिखित है - विश्नोई सम्प्रदाय, जसनाथी सम्प्रदाय, दादू सम्प्रदाय, रामस्नेही सम्प्रदाय, परनामी सम्प्रदाय, निरंजना सम्प्रदाय, लालदासी सम्प्रदय, कबीर पंथा।

रामस्नेही सम्प्रदाय:-

- इसके प्रवर्तक रामचरणदास जी थे। इनके बचपन का नाम रामकिशन था। जिसे इनके गुरु कृपाराम ने रामचरण कर दिया।
- रामचरण जी का जन्म टोंक जिले के सोड़ा ग्राम में विजयवर्गीय परिवार में 1518 को हुआ। इनके पिता का नाम बखतराम, माता का नाम देवजी था। इनका स्वर्गवास 1598 शाहपुरा (भीलवाड़ा) में हुआ था। यहां पर रामस्नेही सम्प्रदाय की मुख्य पीठ हैं।
- इनके द्वारा ब्रजभाषा में लोकगीतों का संग्रह किया गया, जिसे आन भाई बेणी कहा।
- इनके पूजा स्थल रामद्वारा कहलाते हैं। व मुख्य ग्रन्थ अर्णमिपाणी हैं।
- दादू जी ने अपने उपदेश साडुकड़ी भाषा में दिये
- इस मत में मूर्ति पूजा नहीं करते व गुलाबी वस्त पहनते हैं।
- फूलडोल मेला (शाहपुरा) होली के पश्चात दूसरे दिन चैत्र कृष्ण द्वितीया से चैत्र कृष्ण पंचमी तक लगता हैं।
- रामचरण जी के 12 प्रधान शिष्य थे तीन अन्य स्थानों पर पीठ है।
- **सिंहथल** - बीकानेर, प्रवर्तमिक - हरिदास जी थे। इनके गुरु जयमल दास थे। इन्हेंने निशानी नामक ग्रंथ लिखा, जिसमें प्राणायाम व योग साधना का वर्णन किया गया हैं।

- **रैण** - नागौर, प्रर्वतक - दरियावजी। इनके गुरू प्रेमनाथ थे। इनका जन्म पाली में विक्रम संवत 1758 को हुआ। इन्होने हिन्दू मुस्लिम एकता पर जोर दिया तथा राम शब्द के दो अर्थ बताये - रा-राम, म-मोहम्मद
- **खेडापा** - जोधपुर, प्रवर्तक रामदास जी। इनके गुरू हरिरामदास जी थे। इन्होनंे मूल सम्प्रदाय के आदेशों को ही आगे बढ़ाया।

दादू सम्प्रदायः-

- इसके प्रवर्तक दादू दयाल जी थे। इन्हंे राजस्थान का कबीर कहा जाता हैं। इनका अभिवादन सत्यराम होता हैं। दादू जी का जन्म चैत्र शुक्ल अष्टमी सन् 1544 को गुजरात के अहमदाबाद नगर में हुआ था।
- सन्त बुद्धाराम/बुडडन जी / बृन्दावन जी (ये संत कबीर के शिष्य थे) से दीक्षा ग्रहण की और 19 वर्ष की आयु में राजस्थान आये।
- इन्होनें अपना प्रथम उपदेश 1568 में सांभर मंे दिया तथ यही बह्म की उपासना पर जोर देते थे तथा दादू पंथी साधु विवाह नहीं करते थे।
- 1585 में दादू जी को अकबर ने धार्मिक चर्चा के लिए फतेहपुर सीकरी बुलाया।
- इन्होनें बाहय आडम्बरों को दूर करने के लिए निपख नामक आन्दोलन चलाया।
- नरायणा (नरैणा) जयपुर में इनका अन्तिम समय व्यतित हुआ, जहां इनकी प्रधा गद्दी हैं।
- कविता रूप में व्यक्त विचारों को दादू वाणी तथा दादू दयाल जी रा दूहा कहा जाता हैं।
- मूर्ति पूजा का घोर विरोध किया तथा हिन्दू मुसलमान एकता पर ध्यान दिया था।
- निर्गुण ब्रह्म का उपसना व शव को जंगलों में खुला छोड़ना, मोक्ष में विश्वास नही रखत थे।
- दादू जी का मेला नरायणा मे फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को भरता हैं।
- दादू जी के 152 शिष्य माने जाते हैं जिनमें से 52 प्रधान शिष्य थे जो 52 स्तम्भ कहलाते थे।

दादू की पाँच प्रमुख शाखाऐं हो गई -

1. खालसा (गरीबदास जी से संबंधित)

1. विरक्त (इसे निहंग भी कहा जाता है, जो चलते फिरत हुये गृहस्थों को आदेश देते हैं)
2. उतरादे (ये राजस्थान छोड़कर उत्तर भारत चले गये) खाकी (ये शरीर पर भस्म रमा कर रहते हैं) 5. नागा (ये नंगे रहते है, इसकी स्थापना सुंदरदास जी ने की थी)

अलख दरीबा - दादू पंथ के सत्संग स्थलों को कहा जाता है।
हरडेबानी - दादू जी के शिष्य रज्जब जी द्वारा लिखित ग्रंथ।
दादू खोल - दादू जी के शरीर को भराना (नारायणा, जयपुर) की पहाड़ी की इस गुफा में समाधि दी गई।
दादूजी के मुख्य शिष्य - इनके 152 शिष्य थे, जिनमें इनके पुत्र गरीबदास व मिस्किन दास के अलावा रज्जब जी, सुंदर दास जी, जन गोपाल जी, माधोदास जी, जगन्नाथ जी थे।
संत सुदरदास जी - इनका जन्म दौंसा में खण्डेलवाल परिवार में 1956 में हुआ। इनके पिता का नाम परमानन्द था। इन्होंने दादू पंथ में नागा साधुवर्ग को प्रारंभ किया। इनके ग्रंथ ज्ञान समुद्र, ज्ञान सवैया, सुंदर विलास, सुंदर सार तथा सुंदर ग्रंथावली हैं। इनका निधन 1664 में सांगानेर में हुआ।

रज्जब जी - इनका जन्म सांगानेर (जयपुर) में 16 वीं शताब्दी में पठान परिवार में हुआ। विवाह करने जाते समय दादू जी के उपदेश सुन लिए तो उसी समय उनके शिष्य बन गये और आजीवन दूल्हें के वेश में दादू के उपदेश देते रहे। इन्होंने रज्जब वणी, हरडे वाणी व सर्वगी ग्रंथ लिखे। इनका स्वर्गवास सांगानेर में हुआ, जहां इनकी प्रधान गद्दी हैं।

संत गरीबदास जी - ये दादू दयाल जी के पुत्र थे, जिनका जन्म 1575 में हुआ। दादू जी के बाद प्रधान गद्दी पर ये ही बैठे थे, इन्होंने साखी पद, अनभै प्रबोध तथा अध्यात्म प्रबोध नामक ग्रंथ लिखे।
संत जनगोपाल जी - ये फतेहपुर सीकरी निवासी थे। दादू जी की सीकरी यात्रा के दौरान इन्होंने गुरमंत्र लिया तथा दादू दयाल लीला परची, धुरव चरित्र, प्रहलाद चरित्र, भरत चरित्र, मोह विवेक, सुख संवाद, चौबीस गुरुओं की लीला नामक ग्रंथ लिखे।

मीरा बाई (मीरा दासी सम्प्रदाय):-

- मीरा का जन्म मेडता ठिकाने के कुडकी ग्राम (वर्तमान पाली) में हुआ।
- मीरा का जन्म का नाम प्रेमल था, इन्हें राजस्थान की राधा भी कहा जाता हैं। माता का वीर कंवरी तथा पिता का नाम रतनसिह (राठौड़ वंशी बाजोली के जागीरदार थे)।

  शिक्षक व धार्मिक गुरू गजाधर थे तथा इनके पुस्तैनी गुरू चम्पा जी थे तथा इनके गुरू रैदास थे एवं आध्यात्मिक गुरू

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718

अध्याय – 19

हस्त शिल्प

1. ब्लू पॉटरी -

चिनी - मिट्टी के बर्तनों पर नीले रंग से चित्रकारी करना।

- यह कला मूल रूप से पर्शिया ईरान की हैं।
- राजस्थान में इसे लाने का श्रेय मानसिह को हैं।
- इस कला का सर्वाधिक विकास जयपुर शासक रामसिह द्वितीय के समय हुआ था।
- इस कला को पुर्नजिवित करने का श्रेय कृपाल सिह शेखावत को है जिनका जन्म स्थान सीकर जिला हैं।
- कृपाल सिह शेखावत को 1974 में पदम् श्री पुरस्कार दिया जा चुका हैं।
- ब्ल्यू पॉटरी की एकमात्र महिला कलाकार नाथी बाई हैं।

2. ब्लेक पॉटरी -

- ब्लेक पॉटरी कोटा की प्रसिद्ध हैं।

3. कागजी पॉटरी:-

- कागजी पॉटरी अलवर की प्रसिद्ध हैं।

4. मोलेला पॉटरी:-

- मोलेला पॉटरी राजसमन्द की प्रसिद्ध हैं।

5. बिकानेरी पॉटरी:-

- इस पॉटरी में लाख का प्रयोग किया जाता हैं।

मीनाकारी

- सोने चाँदी के गहनों पर मीना जड़ाई का कार्य मीनाकारी कहलाता हैं।
- यह कला लाहौर से लायी गई थी मानसिह के समय।
- यह जयपुर की प्रसिद्ध हैं।
- सरदार कुदरत सिह को 1988 में इस काल के लिए पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त हो चुका हैं।

थेवा कला -

- थेवा का अर्थ हैं - सेटिंग
- आभुषणों पर किमती काच के टुकड़ों को सेट करना
- इस कला का प्रारम्भ आज से ऽ00 वर्ष पूर्व सावंत सिह के समय प्रतापगढ़ में हुआ था।
- इसके जन्मदाता नाथुलाल सोनी थे।
- इसमें प्रयुक्त काच को बेल्जियम से मंगाया जाता हैं।

रत्नाभुषण -

- ष्हिरे - जवाहारात-पन्ना का कार्य रत्नाभुषण कहलाता हैं।
- विश्व की सबसे बड़ी मण्ड़ी जयपुर हैं।

कोफ्तगिरी -

- फोलाद से बनी वस्तुओं पर सोने के पतले तारों से जड़ाई को हि कोफ्तगिरी कहते हैं।
- राजस्थान में इसके प्रमुख केन्द्र जयपुर व अलवर हैं।

बादला

- जस्ते से निर्मित पानी की बोतल जिसके चारों तरफ रंगीन कपड़ा लगा हुआ

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ हैं यह एक सैंपल मात्र हैं / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास हैं कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

अध्याय – 20

मेले एवं त्यौहार वस्त्र एवं आभूषण

राजस्थान के प्रमुख त्यौहार

हिन्दू कैलेंडर के अनुसार देशी महीने

1. **चैत्र** –मार्च-अप्रेल
2. **वैशाख** –अप्रेल -मई
3. **ज्येष्ठ** –मई-जून
4. **आषाढ़** –जून-जुलाई
5. **श्रावण**-जुलाई- अगस्त
6. **भाद्रपद**-अगस्त -सितम्बर
7. **अश्विन**-सितम्बर- अक्टूबर
8. **कार्तिक** – अक्टूबर –नवम्बर
9. **मार्गशीर्ष** –नवम्बर – दिसम्बर
10. **पौष** –दिसम्बर- जनवरी
11. **माघ** –जनवरी-फरवरी
12. **फाल्गुन** –फरवरी –मार्च

हिंदुओं के प्रमुख त्यौहार

धुलंडी - यह होली के दूसरे दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा(एकम) को मनाई जाती है।होलिका दहन बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाता है। वहीं दूसरी दिन को**धुलेंडी**या धूलिवंदन भी कहा जाता है। इस दिन लोग एक दुसरे पर रंग, गुलाल और अबीर आदि फेंकते हैं और ढोल बजा कर होली के गीत गाते हैं साथ ही घर-घर जाकर अपने दोस्तों और परिवारों आदि को भी रंग लगाया जाता है।

गणगौर - यह राजस्थान के सबसे खास त्योहारों में से एक है और राजस्थानियों के लिए यह त्यौहार एक विशेष महत्व रखता है। इस त्यौहार में सुहागन स्त्रियाँ शिव-पार्वती की पूजा करती है। गणगौर के इस त्यौहार के दौरान युवा लड़कियां अपने सर्वश्रेष्ठ संगठनों में खुद को सजाती

हैं और अपनी पसंद के जीवनसाथी के लिए देवी से आशीर्वाद मांगती हैं। दूसरी ओर विवाहित महिलाएं अपने पतियों के कल्याण के लिए प्रार्थना करती हैं। गणगौर त्यौहार में स्त्रियां अच्छे पति का वरदान पाने के लिए पूजा करती है। गणगौर का त्यौहार पार्वती के "गौने" का सूचक है। गणगौर का त्यौहार लगभग १४ दिन तक (चैत्र कृष्ण एकम से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया) चलता है। इन दिनों सर्वाधिक घूमर नृत्य किया जाता है। जयपुर की गणगौर प्रसिद्ध है। धींगा गणगौर एवं बेंतमार मेला जोधपुर में लगता है। बिना ईसर की गणगौर जैसलमेर में पूजी जाती है। उदयपुर के महाराणा राजसिह प्रथम ने अपनी छोटी महारानी को प्रसन्न करने के लिए रीति के विरुद्ध जबरदस्ती वैशाख कृष्ण तृतीया को गणगौर मनाने का प्रचलन प्रारंभ किया था जिससे इसका नाम धींगा गणगौर प्रसिद्ध हुआ। राजस्थान में नाथद्वारा क्षेत्र में चेत्र शुक्ल पंचमी को गुलाबी गणगोर मनाई जाती है।

***शीतला अष्टमी** - यह त्यौहार चैत्र कृष्ण अष्टमी को मनाया जाता है।शीतलाअष्टमी हिन्दुओं का महत्वपूर्ण त्यौहार है।इस दिन शीतला माता को ठंडा भोग चढ़ाया जाता है एवं शीतला माता की पूजा की जाती हैऔर व्रत भी रखा जाता है।समस्त भोजन सप्तमी की संध्या को बनाकर रखा जाता है।इस दिन बासी खाना खाया जाता है जिस से इसे 'बासिड़ा' कहा जाता है ।बच्चो के चेचक निकलने पर शीतला माता की पूजा की जाता है। इसलिए शीतला माता को बच्चों की सरंक्षिका भी कहा जाता है।शीतलामाता का मंदिर चाकसू-जयपुर में है। शीतला माता का वाहन गधा है माता के पुजारी कुमार जाती के लोग होते है*

***घुड़ला का त्यौहार** – यह त्यौहारजोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर आदि जिलो मेंचैत्र शुक्ल अष्टमी से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया तक चलता है।*

***घुड़ला त्यौहार का आरम्भ** – कोसाणा गांव में लगभग 200 कुंवारी कन्याएँ गणगौर पर्व की पूजा कर रही थी। घुडला खान मुसलमान सरदार अपनी फ़ौज के साथ निकल रहा था, उसने सभी बच्चियों का अपहरण कर लिया, इसकी सूचना गाँव के कुछ घुड़सवारों ने जोधपुर के राव सातल सिह राठौड़ जी को दी। राजपुतो की तलवारों ने भागती मुग़ल सेना का पीछा कर ख़ात्मा कर दिया। राव सातल सिह जी ने तलवार के भरपुर वार से एक ही झटके में दुष्ट घुडला खान का सिर धड़ से अलग कर दिया। राव सातल सिह ने सभी बच्चियों को मुक्त करवाकर उनके सतीत्व की रक्षा की। गांव वालों ने उस दुष्ट घुडला खान का कटा हुआ सिर बच्चियों को सोंप दिया।बच्चियो ने घुडला खान के सिर को घड़े पर रख कर उस घड़े मे जितने*

घाव घुडला खान के शरीर पर हुये, उतने छेद किये और फिर पुरे गाँव मे घुमाया एवं हर घर मे रोशनी की गयी। तभी से घुडला त्यौहार मनाया जाता हैं।

नववर्ष *- यह चैत्र शुक्ल एकम को मनाया जाता हैं। इस दिन हिन्दुओं का नया वर्ष शुरू होता हैं।हिंदी पंचांग में इस तिथि का बहुत अधिक महत्व हैं।*

वसन्तीय नवरात्र *- यह नवरात्र चैत्र शुक्ल एकम से नवमी तक चलते हैं। इसमें इन नौ दिनों में माँ दुर्गा की पूजा की जाती हैं।*

अरुंधति व्रत *- यह व्रत चैत्र शुक्ल एकम से शुरू होता हैं और चैत्र शुक्ल तृतीया तक चलता हैं।*

अशोकाष्टमी *- यह चैत्र शुक्ल अष्टमी को मनाया जाता हैं। इस दिन अशोक वृक्ष की पूजा की जाती हैं।*

रामनवमी *- यह त्यौहार अंतिम नवरात्र (चैत्र शुक्ल नवमी) के दिन भगवान श्री राम के जन्म दिन पर मनाया जाता हैं। इस दिन रामायण का पाठ किया जाता हैं। व्यापारी लोग इस दिन अपने बही खाते बदलते हैं। श्रद्धालुगण सरयू नदी में स्नान करके पुण्य लाभ कमाते हैं।*

आखा तीज/अक्षय तृतीया *- यह वैशाख शुक्ल तृतीया को मनाया जाता हैं। यह एक अबूझ सावा हैं। इस दिन राजस्थान में सर्वाधिक बाल विवाह होते हैं। इस दिन किसान लोग अपने हल एवं सात अन्ना की पूजा करते हैं और शीघ्र वर्षा होने की कामना करते हैं। इसी दिन*

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ग्राम विकास अधिकारी (ग्राम सेवक) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718

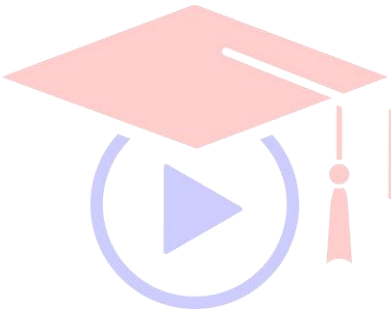

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

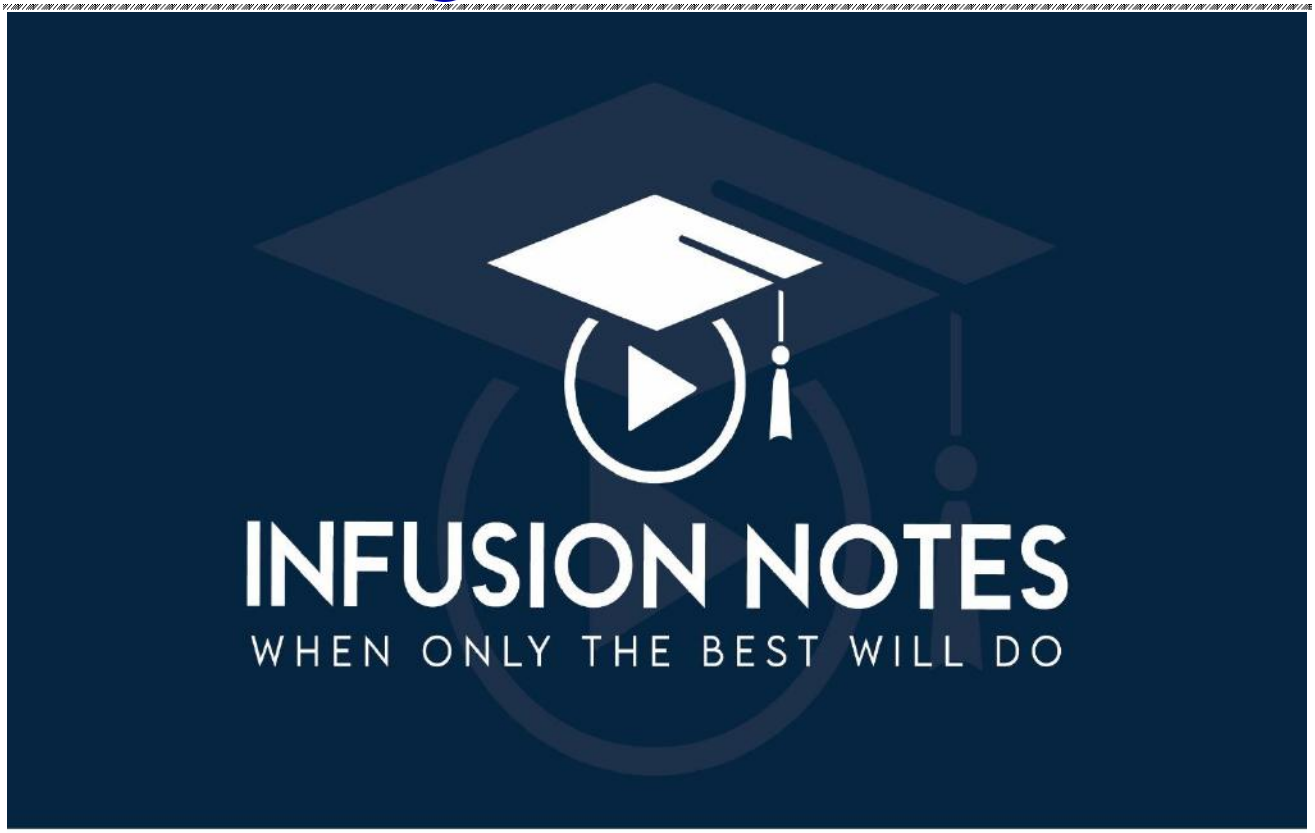

AVAILABLE ON/

01414045784

contact@infusionnotes.com

http://www.infusionnotes.com/